जनवरी, 2025 , वर्ष : 46 अंक : 1

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

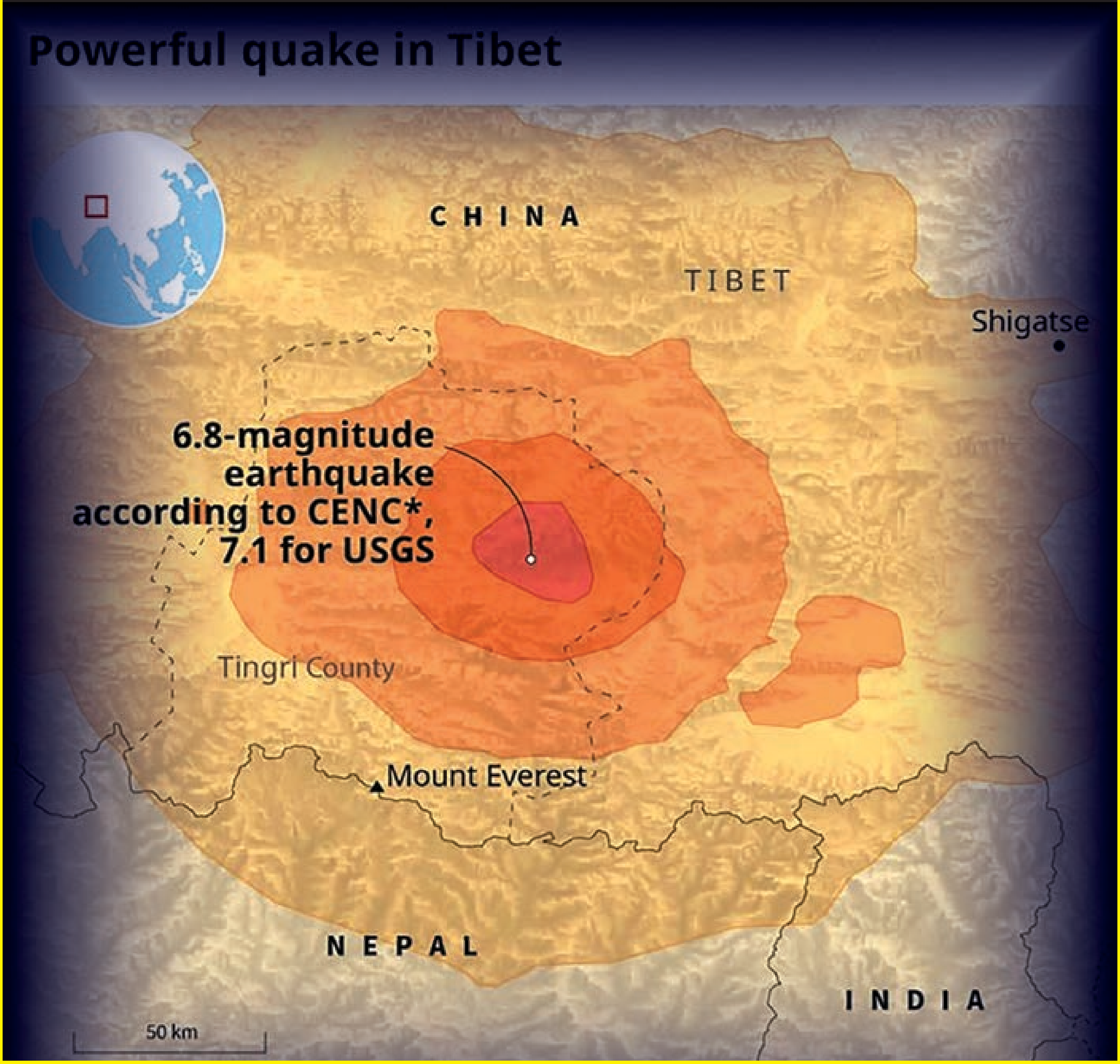

तिब्बत में 7.1 तीव्रता का भूकंप आया

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

तिब्बत देश

जनवरी, 2025 , वर्ष : 46 अंक : 1

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

प्रस्तुति के दौरान सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग

प्रधान संपादक
ताशी देकि

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
मिग्मार छमचो

वितरण प्रबंधक
नावांग छोडेंन

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा
नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट

coordinator@indiatibet.net

समाचार -

०९. परम पावन दलाई लामा ने तिब्बत में आए भूकंप को लेकर गहरा शोक जताया 1

०१. परम पावन दलाई लामा ने तिब्बत में आए भूकंप को लेकर गहरा शोक जताया 2

०३. सिक्योंग ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया, कल उनके पार्थिव शरीर को राष्ट्रीय सम्मान के साथ सुपुर्द खाक किया गया 4

०४. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने अमेरिका के ४७वें राष्ट्रपति डोनाल्ड जॉन ट्रम्प और विदेश मंत्री मार्को एंटोनियो रुबियो को बधाई दी 4

०६. अरुणाचल यात्रा के समापन पर सिक्योंग ने पीआरसी की मेगा बांध परियोजनाओं के गंभीर दुष्परिणामों पर कड़ा संदेश दिया 6

०८. केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने भारत का ७६वां गणतंत्र दिवस मनाया 7

०९. धर्मशाला स्थित सीटीए के नेतृत्व में तिब्बतियों ने डिंगरी भूकंप पीड़ितों के साथ एकजुटता में प्रार्थना सेवा आयोजित की 7

१०. सुरक्षा मंत्री डोल्मा ग्यारी ने स्टटगार्ट में फ्री डेमोक्रेटिक पार्टी की एपिफेनी बैठक में भाग लिया, पूर्व जर्मन वित्त मंत्री से बातचीत की ०७ जनवरी, २०२ 8

११. डॉ. ग्यालो ने तिब्बती संसद का दौरा किया, स्पीकर और डिप्टी स्पीकर से मुलाकात की 8

१३. ईटानगर में कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज– इंडिया की बैठक और ‘पर्यावरण और सुरक्षा’ पर संगोष्ठी 9

१४. स्कॉटिश संसद में तिब्बती प्रतिनिधि की भूमिका को मान्यता देने वाला प्रस्ताव पेश 10

१५. तिब्बत समर्थक समूह ने शिगात्से भूकंप के पीड़ितों के प्रति संवेदना व्यक्त की 10

१६. चीन द्वारा नौ तिब्बतियों को कैद करने और गायब करने की जांच कर रहे हैं संयुक्त राष्ट्र के नौ विशेषज्ञ 11

१८. तिब्बत में भूकंप: प्राकृतिक नहीं, मानव निर्मित आपदा 13

निष्कर्ष 16

अपनी बात

प्रयागराज महाकुंभ, 2025 के बौद्ध विशेष शिविर में तिब्बत की चर्चा

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
श्री श्याम मंदिर, खेतड़ी
जिला–झुंझुनूं (राजस्थान)
मो.–9079352370
E-mail:- shyamnathji@gmail.com

प्रयागराज महाकुंभ, 2025 में आयोजित बौद्ध विषेष समागम की जबर्दस्त लोकप्रियता ने प्रमाणित कर दिया कि तिब्बती धमर्गगुरु परमपावन दलाईलामा की बौद्ध दर्षन संबंधी प्रतिबद्धता का प्रभाव प्रषंसनीय है। कुछ अन्य संगठनों के सहयोग से हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा द्वारा आयोजित इस षिविर में लोअर संगम मार्ग किनारे भगवान् बुद्ध की बीस फीट ऊँची प्रतिमा थी। इसमें तथागत बुद्ध खड़े थे और आषीर्वाद दे रहे थे। इस स्वर्णिम बुद्ध प्रतिमा के साथ करोड़ों सनातनियों ने फोटो–विडियो बनाये।

हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रद्धेय गेषे लामा चोसफेल जोत्पा ने बताया कि बौद्ध दर्षन ही भारत एवं तिब्बत के संबंधों का आधार है। भारतीय संतों एवं विद्वानों ने भगवान् बुद्ध के विचारों को तिब्बत में फैलाया था। दलाईलामा उन्हीं विचारों को समस्त विष्व में प्रकाषित–प्रचारित–प्रसारित कर रहे हैं। वे इस कार्य को सन् 1959 से भारत में रहते हुए कर रहे हैं। उसी वर्ष साम्राज्यवादी चीन ने स्वतंत्र देष तिब्बत पर अवैध नियंत्रण कर लिया था। उस समय किसी और देष में नहीं जाकर दलाईलामा ने भारत में शरण ली थी। वे तब धर्मप्रमुख के साथ तिब्बत के राजप्रमुख भी थे। वे भारत को ''गुरु'' तथा तिब्बत को ''चेला'' कहते हैं। वे भारत को अपना दूसरा घर कहते हैं।

दलाईलामा ने अपने आचार–विचार–व्यवहार से लोगों में बौद्ध दर्षन के प्रति गहरा लगाव पैदा किया है। बौद्ध विषेष षिविर में आने वाले लोग दलाईलामा की तस्वीरों को श्रद्धापूर्वक देखते थे तथा उनके दीर्घजीवन की कामना करते थे। लोग उन्हें शांति एवं करुणा का प्रतीक मानते–समझते हैं। षिविर में कई देषों से आये पूज्य लामागण, रिंपोछेगण, बौद्ध विद्वानों एवं शोधार्थियों के प्रेरणापूर्ण विचारों से लोग प्रभावित थे। बौद्ध दर्षन की प्राचीन नालंदा परंपरा में निहित मानवीय मूल्यों को लोग उनसे भलीभाँति सीख–समझ रहे थे। लामा जोत्पा ने बताया कि इन्हीं मूल्यों ने भारत को ''विष्वगुरु'' बनाया था। शांति, अहिंसा, करुणा, सद्भाव, सहयोग तथा पर्यावरण–संरक्षण ही वे मानवीय मूल्य हैं जिनकी आवष्यकता सभी को है। ये सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तथा प्रत्येक स्तर पर सदैव उपयोगी हैं।

''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पष्यन्तु तथा मा कष्चिद् दुःखभाग भवेत्'' के मूल में मानवीय मूल्य हैं। ये ही सभी को सुखी और निरोग रखते हैं। इनके कारण हम सभी को अच्छा देखते–समझते हैं और किसी का भी दुःख हमें बुरा लगता है। ''असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय तथा मृत्योर्मामृतंगमय'' भी इन्हीं से संभव है। ये ही हमें सत्य, प्रकाष और अमरत्व की राह पर ले जाते हैं। इस प्रकार ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' अर्थात् सारे संसार को अपना परिवार समझने के लिये हमें मानव मूल्यों को ही अपनाना होगा।

विषेष व्याख्यानों में बौद्ध विद्वानों ने बताया कि सिर्फ मानवीय मूल्य ही सनातन हैं और इन्हें मानने वाले ही सनातनी हैं। पूजा–पद्धति, भाषा, क्षेत्र, वेषभूषा आदि की विविधता के बावजूद हम सभी सनातनी हैं, क्योंकि हम मानवीय मूल्यों को मानते हैं। प्रयागराज में 13 जनवरी, 2025 से प्रारम्भ पैंतालिस दिवसीय पूर्ण महाकुंभ में सभी प्रकार के ऐसे ही सनातनी संगम घाटों पर स्नान कर रहे हैं। प्रयागराज महाकुंभ हर बारहवें वर्ष में आयोजित होता है। ऐसे बारह महाकुंभ के बाद 144वें वर्ष के इस आयोजन को ''पूर्ण महाकुंभ'' कहा गया है।

गंगा–यमुना–सरस्वती के त्रिवेणी संगम पर वर्ष 2013 के महाकुंभ में भी मैंने तिब्बत का प्रष्न प्रमुखता से उठते देखा था। मुझे इस बार भी ऐसा ही देखने को मिला। सनातनी चाहते थे कि उपनिवेषवादी चीन सरकार पर दबाव डालकर तिब्बत समस्या का समाधान किया जाये। इससे हम भारतीय पहले की तरह सुगमतापूर्वक कैलाष–मानसरोवर की पवित्र यात्रा कर सकेंगे। साम्यवादी चीन के नियंत्रण के कारण कैलाष–मानसरोवर यात्रा कठिन हो गई है। चीन सरकार ने इस यात्रा को मोटी कमाई का साधन बना लिया है।

तिब्बती परंपरानुसार निर्मित मंडल की षिविर में महापूजा की गई। मंडल का निर्माण रंगोली और यज्ञवेदी की तरह होता है। यह अत्यन्त कलात्मक तथा सौंदर्य से भरपूर होता है। इसे देखने के लिए लोग लालायित थे। वे इसके निर्माण की प्रक्रिया भी समझना चाहते थे। इसी प्रकार पंचषील के झंडे भी आकर्षण के केन्द्र में थे। उत्तर प्रदेष सरकार के संस्कृति विभाग ने यहाँ शोधपूर्ण प्रदर्षनी लगाई थी। बौद्ध दर्षन संबंधी कई दुर्लभ सामग्री यहाँ देखने को मिली। प्रदर्षित सामग्रियों के साथ इनके स्रोत, काल तथा महत्व के वर्णन से लोगों की रुचि और बढ़ जाती थी। कई लोग इन्हें देखने के लिये प्रतिदिन आने लगे थे।

हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा द्वारा लगाई गई प्रदर्षनी में अनेक हिन्दू देवी–देवताओं की तस्वीरें थीं। उनमें ब्रह्मा, विष्णु, षिव, काली, सरस्वती, हनुमानजी आदि के नाम भोटी भाषा में लिखे थे। बौद्ध परंपरा में इन्हें उन्हीं नामों से पूजा जाता है। हम लोग हिन्दू पूजा के समय संकल्प में ''बौद्धावतारे'' बोलते हैं। इस प्रकार भगवान् बुद्ध भारतीय सनातनी परंपरा के अभिन्न अंग हैं। बौद्ध परंपरा और वैदिक परंपरा के अद्भुत संगम का यह महत्वपूर्ण उदाहरण है। बौद्ध धर्मगुरु दलाईलामा भी इसी संगम के प्रतीक हैं। स्वास्थ्य खराब होने के कारण इस बार प्रयागराज महाकुंभ में वे नहीं जा सके। इससे बहुत लोग कुछ निराष भी हुए। इसके बावजूद भारत–तिब्बत संबंधों में नई ऊर्जा भरने के लिये प्रयागराज पूर्ण महाकुंभ, 2025 सदैव प्रेरित–प्रोत्साहित करता रहेगा।

◆ परम पावन दलाई लामा ने तिब्बत में आए भूकंप को लेकर गहरा शोक जताया

०७ जनवरी, २०२५

धर्मशाला। आज ०७ जनवरी की सुबह तिब्बत के डिंगरी में भयंकर भूकंप का मंजर देखने को मिला। इसमें कई लोगों की जान चली गई और बड़ी संख्या में लोग घायल हो गए। इस भूकंप की दुखद खबर सामने आने के बाद तिब्बतियों के आध्यात्मिक धर्मगुरु परम पावन १४वें दलाई लामा ने इस आपदा पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए शोक संदेश जारी किया है।

परम पावन की आधिकारिक वेबसाइट पर जारी संदेश में कहा गया है, 'आज सुबह तिब्बत के डिंगरी और आसपास के क्षेत्रों में आए विनाशकारी भूकंप के बारे में जानकर मुझे गहरा दुख हुआ है। इसमें कई लोगों की जान चली गई, कई लोग घायल हो गए और बड़ी संख्या में घरों और संपत्तियों को भारी नुकसान हुआ।'

संदेश के अंत में लिखा गया है, 'मैं जान गंवाने वाले और घायल हुए लोगों के लिए प्रार्थना करता हूं। मैं घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं।'

---

०२. तिब्बत में विनाशकारी भूकंप से पीड़ित हुए लोगों के लिए प्रार्थनाएं

०९ जनवरी, २०२५

ताशी ल्हुनपो, बायलाकुप्पे, कर्नाटक, भारत। तिब्बत में हाल में आए विनाशकारी भूकंप के पीड़ितों के लिए प्रार्थना करने के लिए आज ०९ जनवरी की सुबह कर्नाटक के बायलाकुप्पे की तिब्बती बस्ती स्थित पुनर्स्थापित ताशी ल्हुनपो मठ के प्रांगण और उसके आस-पास लगभग १२,००० भिक्षु, भिक्षुणियाँ और आम लोग इकट्ठा हुए। भूकंप की सर्वाधिक विनाशलीला तिब्बत के शिगात्से और डिंगरी में देखने को मिली है। शिगात्से में मुख्य मठ ताशी ल्हुनपो है, जिसकी स्थापना प्रथम दलाई लामा ग्यालवा गेंडुन द्रुप ने की थी। यह पहले पंचेन रिनपोछे की पीठ थी।

इस समय परम पावन दलाई लामा दक्षिण भारत में पुनः स्थापित ताशी ल्हुनपो मठ में ही विराजमान हैं। इसलिए स्वाभाविक था कि इसी मठ में शिगात्से और डिंगरी के पीड़ित लोगों के प्रति प्रार्थना करने के लिए आयोजित बड़ी सभा में वह शामिल हों और वह हुए भी। इस सभा में उनका शामिल होना विशेष संयोग रहा।

प्रार्थना के लिए आज सुबह से ही आसपास की तिब्बती बस्तियों से लोग बहुत जल्दी आने लगे। हालांकि उन्हें सुबह ०६:१५ बजे के बाद ही प्रवेश मिलना शुरू हुआ। भिक्षु मंदिर में व्यवस्थित पंक्तियों में बैठ गए। औपचारिक प्रार्थना शुरू होने से पहले मंडली ने बुद्ध शाक्यमुनि के मंत्र का जाप किया।

जब परम पावन पहुंचे तो उन्होंने बुद्ध और प्रथम दलाई लामा की विशाल और सोने की परत चढ़ी तस्वीरों के सामने सजाया गया अपना आसन ग्रहण किया। इन दोनों तस्वीरों के साथ ही पिछले प्रमुख पंचेन रिनपोछे और वर्तमान पंचेन लामा गेंडुन चोएक्यी न्यिमा की तस्वीरें भी रखीं गई थीं। परम पावन के दाहिनी ओर शारपा चोजे रिनपोछे, वर्तमान महंत और पूर्व महंत बैठे थे। उनके साथ केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और निर्वासित तिब्बती संसद के सेवानिवृत्त सदस्य भी थे।

मीडिया के सदस्यों को सभा में परम पावन की उपस्थिति को देखने और रिकॉर्ड करने के लिए मंदिर में जाने की अनुमति दी गई थी।

प्रार्थना की शुरुआत बुद्ध की स्तुति और प्रार्थना के रूप में की जानेवाली 'तीन सातत्य' से हुई। इसके बाद शरण लेने और बोधिचित्त के जागृत मन को उत्पन्न करने वाले छंदों का गान है। समय-समय पर परम पावन मुड़कर भिक्षुओं की सभा का निरीक्षण करते और उन पर एक नजर डाल लेते थे।

प्रार्थना 'चार अपरिमेय इच्छाओं की प्रार्थना' और 'समंतभद्र रचित प्रार्थनाओं में सर्वप्रथम प्रार्थना के साथ जारी रही। इसके बाद आगत लोगों के बीच तिब्बती मक्खन वाली चाय और रोटी वितरित की गई और उन्हें आशीर्वाद देने के लिए प्रार्थना की गई।

ताशी ल्हुनपो मठ के अनुशास्ता ने परम पावन और अन्य आध्यात्मिक धर्म गुरुओं द्वारा संचालित प्रार्थनाओं के पाठ की घोषणा की। इसके बाद उन्होंने सभा में घोषित किए गए दान की सूची पढ़ी।

इसके बाद नागार्जुन के 'मौलिक ज्ञान' से अभिवादन का एक श्लोक पढ़ा गया। इसका भावार्थ इस प्रकार है-

'प्रतीत्य समुत्पाद में कोई अंत नहीं है, कोई उत्पत्ति नहीं है, कोई विनाश नहीं है, कोई स्थायित्व नहीं है, कोई आगमन नहीं है, कोई जाना नहीं है, कोई पृथकता नहीं है और कोई समानता नहीं है, मैं पूर्ण बुद्ध को नमन करता हूँ, सभी शिक्षकों में सर्वोच्च, जिन्होंने [यह] शांति सिखाई, जो विस्तार से मुक्त है,' जे त्सोंगखापा द्वारा रचित 'प्रतीत्य समुत्पाद की शिक्षा देने के लिए बुद्ध की स्तुति' का पाठ हुआ। सातवें दलाई लामा, ग्यालवा कलसांग ग्यात्सो की 'अवलोकितेश्वर की स्तुति' का जाप करने के बाद, पूरी सभा ने भूकंप से प्रभावित सभी लोगों के लिए अवलोकितेश्वर के मंत्र- ओम मणि पद्मे हुंग का पाठ किया। सत्र का समापन 'तीन रत्नों का आह्वान करते हुए सत्य वचनों की प्रार्थना' के साथ हुआ। मंदिर से निकलने से पहले, परम पावन ने सभा को इस प्रकार संबोधित किया:

'प्रतीत्य समुत्पात में
न कोई अंत है, न कोई उत्पत्ति,
न कोई विनाश, न कोई स्थायित्व,

न कोई आगमन, न कोई निर्गम,
न कोई पृथकता और न ही कोई एकता,
मैं उन पूर्ण बुद्ध को नमन करता हूँ, जो
सभी गुरुओं में सर्वोच्च गुरु हैं,
जिन्होंने इस शांति का उपदेश दिया,
जो विस्तार से रहित है,'

इसके बाद जे सोंगखापा रचित 'प्रतीत्य समुत्पादन का उपदेश देने के लिए बुद्ध की स्तुति' का पाठ हुआ।

सातवें दलाई लामा, ग्यालवा कलसांग ग्यात्सो की 'अवलोकितेश्वर की स्तुति' का जाप करने के बाद पूरी सभा ने भूकंप से पीड़ित और प्रभावित लोगों के लिए अवलोकितेश्वर के मंत्र- 'ओम मणि पद्मे हुं' का जाप किया। सत्र का समापन 'त्रिरत्नों का आह्वान करते हुए सत्य वचनों की प्रार्थना' के साथ हुआ।

सभा के समापन होने पर मंदिर से प्रस्थान करने से पहले परम पावन ने संबोधित करते हुए कहा-

'हाल ही में तिब्बत में भूकंप की विनाशलीला देखने को मिली है। इसमें बड़ी संख्या में लोगों की जान गई और जान-माल की व्यापक तबाही हुई है। यह बुरे कर्मों के कारण हुआ। धर्म में आस्था न रखने वाले लोगों के पास दुःख से पीड़ित होने के अलावा कोई चारा नहीं है। हालांकि, हममें से जो लोग बौद्ध धर्म में आस्था रखते हैं, वे ऐसे अनुभवों को अतीत में किए गए पापकर्मों को शुद्ध करने और भविष्य में सकारात्मक विचारों को विकसित करने के अवसर के रूप में देख सकते हैं। इस तरह हम इस आपदा को अवसर में बदल सकते हैं। इस तरह की आपदाएं हमें बोधिचित्त के जागृत मन को उत्पन्न करने और शून्यता के दृष्टिकोण को समझने में पूरे मन वचन और कर्म से संलग्न होने के हमारे संकल्प को और मजबूत करने में मदद कर सकती हैं।

'जब तिब्बत में भूकंप जैसी आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है, ऐसे में हम सम्यक ज्ञान के बारे सोचने का तरीका अपना कर इसे अपने कल्याण के लिए कर सकते हैं। ऐसा करने की पूरी क्षमता हमारे हाथ में है। हालांकि पापकर्म परिपक्व हो चुके हैं, फिर भी हम इसे अपने दृढ़ संकल्प को मजबूत करने के अवसर के रूप में ले सकते हैं।'

जहां तक मेरा अपने सोचने के तरीके का सवाल है, तो भूकंप से हुई तबाही की खबरें देखकर बोधिचित्त, शून्यता के दृष्टिकोण को विकसित करने और अवलोकितेश्वर से प्रार्थना करने का मेरा संकल्प दृढ़ और मजबूत हुआ है। हताश होने और दुख में रोने के बजाय, विपत्ति को आत्मज्ञान के मार्ग में एक कारक के रूप में बदलना एक ऐसा अवसर है, जिसका हम सभी साधक लाभ उठा सकते हैं। हालांकि तिब्बत में कई प्राकृतिक आपदाएँ हो रही हैं, हमें इन दुर्भाग्यों को आत्मज्ञान के मार्ग पर चलने के कारकों में बदलने में सक्षम होना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए कि ऐसा करते हुए हम वास्तव में मार्ग पर प्रगति कर सकें। बचे हुए लोगों को भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए बल्कि नए सिरे से दृढ़ संकल्प लेना चाहिए।

'तिब्बत निस्संदेह अवलोकितेश्वर के अनुयायियों की भूमि है। इसलिए, हमें लगातार और मन- वचन- कर्म से सकारात्मक विचारों को विकसित करना चाहिए। अपरिवर्तनीय कर्म के फल के तौर पर जो विनाश हुआ है, उसकी रिपोर्ट देखना वास्तव में दुखद रहा है। हालांकि, यदि हम इस त्रासदी को आत्मज्ञान के लिए एक वास्तविक आकांक्षा विकसित करने के अवसर के रूप में देखें तो यह हमारे लिए मददगार ही साबित होगा। ऐसा करके हम अवलोकितेश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं।

'हमें निराश नहीं होना चाहिए। भूकंप प्राकृतिक आपदाएं हैं। हम इसके लिए किसी और को दोष नहीं दे सकते। वे प्राकृतिक घटनाएं हैं, मानवीय गतिविधियों का परिणाम नहीं। इस तरह से देखा जाए तो इसमें चीनियों पर आरोप थोपने का कोई कारण नहीं बनता है। चूंकि जो कुछ हुआ है वह पापकर्म का परिणाम है, इसलिए दुनिया भर के तिब्बतियों, तिब्बत और अन्य जगहों पर रहने वाले लोगों को सकारात्मक विचारों को विकसित करने पर काम करना चाहिए।'

'जहां तक चीन का सवाल है, ऐसा लगता है कि चीन में बौद्धों की संख्या बढ़ रही है और उनमें से बड़ी संख्या मेरे नाम पर सकारात्मक तरीके से सोचती है।'

'जैसा कि मैंने पहले कहा, हमें खुद को निराश नहीं होने देना चाहिए बल्कि उन सकारात्मक विचारों को विकसित करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए जिन्हें हमने पहले विकसित नहीं किया है और उन सकारात्मक विचारों को बढ़ाना चाहिए जिन्हें हमने पहले विकसित किया है। हमारे बीच उन बंधनों को बनाए रखना महत्वपूर्ण है जो हमारे अडिग विश्वास और प्रतिबद्धता पर आधारित हैं।'

'जहां तक मेरा सवाल है, मैंने जिस तरह से अपना जीवन जिया है, उसमें मैं वास्तव में दृढ़ निश्चयी रहा हूं। आगे भी जब तक मैं सौ साल से अधिक का नहीं हो जाता, तब तक मैं दृढ़ निश्चयी बना रहूंगा। हम सभी को दृढ़ निश्चयी होना चाहिए और प्रतिदिन बोधिचित्त और शून्यता के दृष्टिकोण को कठोर साधना के माध्यम से विकसित करना चाहिए। यह एक ऐसा अर्पण है जो वास्तव में बुद्ध को प्रसन्न करेगा। यह इस लोक और परलोक के लिए पुण्य अर्जित करने का सबसे अच्छा तरीका है। ऐसा करके हम दूसरों के लिए भी उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं कि क्रोध और आसक्ति के विचारों को कैसे कम किया जाए और अपने भीतर शांति कैसे लाई जाए।'

'आम तौर पर दुनिया भर के लोग तिब्बतियों की प्रशंसा करते हैं। वे हमारे गर्मजोशी भरे स्वभाव से प्रभावित होते हैं और तिब्बती जीवन शैली की सराहना करते हैं। मेरे कई मित्र हैं जो तिब्बतियों के अच्छे व्यवहार का सम्मान करते हैं।'

'मैंने आपको पहले ही बताया है कि मैं अपना सर्वश्रेष्ठ करने के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ। अगर मेरे सपनों और अन्य संकेतों के फल का अनुमान

लगाया जाए, तो मैं ११० से अधिक वर्षों तक जीवित रह सकता हूं। इस दौरान मैं अपना सर्वश्रेष्ठ करूंगा, और आप जैसे मेरे सभी धर्ममित्रों को भी अपना सर्वश्रेष्ठ करना चाहिए। तिब्बत में जो त्रासदी हुई है, उसको लेकर न तो क्रोध करना चाहिए और न ही ऐसा कुछ जो हमें निराश करे। यह समझकर कि कठिनाइयों को ज्ञान के मार्ग के कारकों में कैसे बदला जाए, हमें इस आपदा के बारे में अपनी सोच को अवसर में बदलने में सक्षम होना चाहिए।'

◆ ०३. सिक्योंग ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया, कल उनके पार्थिव शरीर को राष्ट्रीय सम्मान के साथ सुपुर्दे खाक किया गया

१० जनवरी, २०२५

धर्मशाला। कल ०९ जनवरी २०२५ को अमेरिका के दिवंगत पूर्व राष्ट्रपति जिमी कार्टर के पार्थिव शरीर को वाशिंगटन डी.सी. के नेशनल कैथेड्रल में राजकीय सम्मान के साथ सुपुर्दे खाक कर दिया गया। श्री कार्टर का १०० वर्ष की आयु में पिछले महीने निधन हो गया था। उनके स्मरण में दी गई श्रद्धांजलि न केवल उनके उल्लेखनीय जीवन को बल्कि उनकी स्थायी विरासत के लिए भी, विशेष रूप से मानवाधिकारों के प्रति उनके जज्बे के प्रति श्रद्धांजलि थी। यह जज्बा उनके राष्ट्रपति पद के दौरान (१९७७-१९८१) और उनके राष्ट्रपति पद के बाद के पूरे करियर के दौरान भी उनमें दिखा।

राष्ट्रपति कार्टर तिब्बत में मानवाधिकारों के हनन को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करने वाले पहले अमेरिकी नेताओं में से एक थे। उन्होंने परम पावन दलाई लामा के साथ घनिष्ठ मित्रता भी बनाए रखी। इसी का परिणाम रहा कि तिब्बती नेतृत्व और लोगों ने उनके परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की है। अपने संदेश में परम पावन दलाई लामा ने लिखा, 'तिब्बती लोग और मैं तिब्बत की स्थिति के प्रति पूर्व राष्ट्रपति कार्टर की गहरी चिंता और हमारे लोगों की पीड़ा को कम करने के उनके प्रयासों के लिए उनके प्रति सदैव आभारी रहेंगे।' इसी तरह, सिक्योंग पेन्पा शेरिंग और स्पीकर समेत पूरे केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने दिवंगत नोबेल पुरस्कार विजेता के निधन पर अपना दुख व्यक्त किया।

सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए राष्ट्रपति कार्टर को 'परम पावन दलाई लामा का करीबी दोस्त और एक महान व्यक्ति बताया, जिनका जीवन दुनिया भर में शांति, न्याय और मानवाधिकारों की वकालत करने के लिए समर्पित था।'

सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने लिखा, 'राष्ट्रपति कार्टर का सैद्धांतिक नैतिकता राजनीतिक रूप से चुनौतीपूर्ण समय में भी चमकती रही, चाहे वह अमेरिका में परम पावन की उपस्थिति का समर्थन करके हो या तिब्बती लोगों द्वारा सहन किए जाने वाले मानवाधिकारों के उल्लंघन को साहसपूर्वक उजागर करके। एक राष्ट्रपति के रूप में, उन्होंने उल्लेखनीय नैतिक साहस और दूरदर्शिता का प्रदर्शन किया और एक नोबेल पुरस्कार विजेता के रूप में, उन्होंने शांति और न्याय के मूल्यों का उदाहरण प्रस्तुत किया।'

सिक्योंग ने अपने पत्र में राष्ट्रपति कार्टर और परम पावन के बीच के एकसमान आदर्शों पर भी प्रकाश डाला, जिसमें कहा गया कि दोनों शांति और सभी लोगों के अधिकारों में गहरा विश्वास करते थे। 'परम पावन ने अक्सर राष्ट्रपति कार्टर के गरीबों और उत्पीड़ितों की सहायता करने के अथक प्रयासों को लेकर अपनी प्रशंसा व्यक्त की है, विशेष रूप से कार्टर सेंटर के माध्यम से, जिसने दुनिया भर में अनगिनत लोगों के जीवन को बेहतर बनाया है।'

सिक्योंग ने अंत में लिखा, 'हम एक ऐसे व्यक्ति के निधन का शोक मना रहे हैं, जिसने अपना जीवन दूसरों की भलाई के लिए समर्पित कर दिया और वास्तव में सार्थक जीवन जिया। हम तिब्बती लोगों के प्रति उनके दृढ़ समर्थन के लिए हमेशा आभारी रहेंगे। उनकी महान विरासत को गहन प्रशंसा के साथ याद किया जाएगा।'

३० दिसंबर २०२४ को केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के नेतृवर्ग और कर्मचारियों ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर के निधन पर शोक व्यक्त करने के लिए प्रार्थना सेवा आयोजित की थी। इस दोपहर में के बाद सीटीए के सारे कार्यालय उनके सम्मान में बद कर दिए गए थे।

◆ ०४. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने अमेरिका के ४७वें राष्ट्रपति डोनाल्ड जॉन ट्रम्प और विदेश मंत्री मार्को एंटोनियो रुबियो को बधाई दी

२३ जनवरी, २०२५

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के प्रमुख सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने राष्ट्रपति डोनाल्ड जॉन ट्रम्प को अमेरिका के ४७वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेने और विदेश मंत्री मार्को रुबियो को अमेरिकी विदेश मंत्री के रूप में नियुक्त होने पर हार्दिक बधाई दी है।

राष्ट्रपति ट्रम्प को दिए गए अपने बधाई संदेश में सिक्योंग ने वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करने में उनके नेतृत्व की प्रशंसा की। उन्होंने उम्मीद जताई कि राष्ट्रपति ट्रम्प के मार्गदर्शन में अमेरिका विश्व मंच पर स्वतंत्रता और लोकतंत्र के प्रतीक के रूप में काम करना जारी रखेगा।

सिक्योंग ने तिब्बती मुद्दे को लंबे समय से लगातार मिल रहे अमेरिकी प्रशासनों के समर्थन को स्वीकार किया और अमेरिका और तिब्बत के

बीच मजबूत और स्थायी दोस्ताना संबंधों पर जोर दिया। उन्होंने तिब्बती लोगों के समर्थन में अमेरिका की अटूट प्रतिबद्धता के लिए आभार व्यक्त किया, जिसने तिब्बतियों के संकल्प को मजबूत किया है और महत्वपूर्ण चुनौतियों के बावजूद उन्हें आशा की किरण प्रदान की है।

सिक्योंग ने राष्ट्रपति ट्रम्प को उनके पहले कार्यकाल के दौरान तिब्बत नीति और समर्थन अधिनियम- २०२० पर हस्ताक्षर करके तिब्बत और तिब्बतियों के लिए समर्थन को मजबूत करने के लिए धन्यवाद दिया।

इसी तरह, सिक्योंग ने विदेश मंत्री मार्को रुबियो को उनकी नई भूमिका के लिए हार्दिक बधाई दी। सिक्योंग ने अमेरिकी कांग्रेस में उनके विशिष्ट कार्यकाल के दौरान तिब्बती मुद्दे के लिए उनकी दृढ़ पक्षधरता और चीन-तिब्बत संघर्ष की गहरी समझ की सराहना की। सिक्योंग ने विश्वास व्यक्त किया कि विदेश मंत्री रुबियो का नेतृत्व तिब्बत के लिए अमेरिकी समर्थन को मजबूत करेगा और स्वतंत्रता, लोकतंत्र और मानवाधिकारों के साझा मूल्यों को बनाए रखेगा।

सिक्योंग ने तिब्बती लोगों के अधिकारों की रक्षा में अमेरिकी नेतृत्व की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए अमेरिकी-तिब्बत संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए राष्ट्रपति ट्रम्प और विदेश मंत्री रुबियो दोनों के साथ मिलकर काम करने की अपनी उत्सुकता व्यक्त की।

उन्होंने अपने बधाई संदेश का समापन दोनों अमेरिकी नेताओं को अपनी भूमिकाओं में सफलता के लिए शुभकामनाएं देते हुए किया और स्वतंत्रता, न्याय और मानवाधिकारों के साझा आदर्शों को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर सहयोग की आशा व्यक्त की।

उन्होंने तिब्बती लोगों के प्रति अमेरिका की अटूट प्रतिबद्धता के लिए आभार व्यक्त किया, जिसने उनके संकल्प को मजबूत किया है और महत्वपूर्ण चुनौतियों के बावजूद उन्हें आशा दी है।

०५. इटानगर में 'पर्यावरण और सुरक्षा' विषयक संगोष्ठी में तिब्बत-भारत की एकजुटता दिखी

२९ जनवरी, २०२५

इटानगर। अरुणाचल प्रदेश की राजधानी इटानगर स्थित विधानसभा के दोरजी खांडू राज्य कन्वेंशन हॉल में हिमालय सुरक्षा मंच, अरुणाचल प्रदेश द्वारा २४ जनवरी २०२५ को 'पर्यावरण और सुरक्षा' विषय पर एक महत्वपूर्ण संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्देश्य अरुणाचल प्रदेश के क्षेत्रीय पारिस्थितिकी तंत्र पर आधारित सुरक्षा के बारे में जागरुकता फैलाना था। इस संगोष्ठी में अरुणाचल प्रदेश के माननीय मंत्रियों और विधायकों, पूर्व मंत्रियों और पूर्व विधायकों, इटानगर नगर निगम (आईएमसी) के प्रमुख और पार्षदों के साथ-साथ अरुणाचल स्वदेशी जनजातीय मंच (एआईटीएफ) के प्रमुख सदस्यों सहित ७०० से अधिक लोगों की भारी भागीदारी देखी गई। एआईटीएफ समुदाय-आधारित संगठनों (सीबीओ) का शीर्ष संगठन है।

संगोष्ठी में अरुणाचल प्रदेश की सभी जनजातियों के प्रतिनिधियों, विभिन्न गैर सरकारी संगठनों, अरुणाचल चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (एसीसीआई), ईटानगर, नाहरलागुन, बांदरदेवा और गोहपुर के बाजार कल्याण संघों के साथ-साथ छात्र संगठनों ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके अतिरिक्त, इस कार्यक्रम में कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे। अरुणाचल प्रदेश के विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने चर्चा में भाग लिया और इस और समृद्ध बनाया।

संगोष्ठी की शुरुआत अरुणाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री पेमा खांडू और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के माननीय नेता सिक्योंग पेन्पा शेरिंग के औपचारिक स्वागत और प्रदर्शनी दौरे के साथ हुई। भारतीय संसद में लोकसभा सदस्य श्री तापिर गाओ और ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंटरी फोरम फॉर तिब्बत (तिब्बत के लिए सर्वदलीय भारतीय संसदीय मंच) के सह-संयोजक ने अपने स्वागत भाषण में चीन के अधीन तिब्बत में कुप्रबंधन के कारण होने वाली पर्यावरण और सुरक्षा चिंताओं को दूर करने में संगोष्ठी के महत्व पर बल दिया। कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज - इंडिया के राष्ट्रीय संयोजक श्री रिनचेन खांडो खिरमे ने अपने परिचयात्मक भाषण में संगठन के उद्देश्यों का अवलोकन प्रस्तुत किया, जिसमें भारत और तिब्बत के बीच दीर्घकालिक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों पर जोर दिया गया।

अपने संबोधन में सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की पहलों, पदाधिकारियों और दृष्टिकोण का अवलोकन किया और भारत-तिब्बत के ऐतिहासिक संबंधों के बारे में विस्तार से बताया। महामहिम सिक्योंग ने क्षेत्र की साझा पारिस्थितिक और सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिए भारत द्वारा सक्रिय कदम उठाने की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला और तिब्बत के पर्यावरणीय क्षरण और भारत की सुरक्षा के लिए इसके भू-राजनीतिक निहितार्थों के बारे में चिंता जताई।

अरुणाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री पेमा खांडू ने अपने मुख्य भाषण में तिब्बत और अरुणाचल प्रदेश के बीच पर्यावरणीय और पारिस्थितिकीय निर्भरता की विशेषता बताई। उन्होंने अरुणाचल प्रदेश की सीमा की ऐतिहासिकता पर प्रकाश डाला, जिसे शिमला संधि के तहत सीमांकित किया गया था। इसके साथ उन्होंने चीन की विस्तारवादी नीतियों पर चिंता व्यक्त की। श्री खांडू ने स्पष्ट किया कि भारत की सीमा तिब्बत से लगती है, चीन से नहीं। उन्होंने चीन द्वारा तिब्बत पर जबरन कब्जे की निंदा की और विकास के नाम पर चीन द्वारा किए जा रहे सांस्कृतिक संहार की आलोचना की। सत्र का समापन हिमालय सुरक्षा मंच के श्री तारह तारक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

दोपहर के सत्र का संचालन राजीव गांधी विश्वविद्यालय में मास कम्युनिकेशन विभाग के सहायक प्रोफेसर और संस्थापक प्रमुख श्री मोजी रीबा ने किया। इस सत्र में प्रसिद्ध तिब्बतविज्ञानी और कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के पूर्व राष्ट्रीय सह-संयोजक श्री विजय क्रांति द्वारा एक अंतर्दृष्टि से संपन्न प्रस्तुति और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के माननीय सिक्योंग महामहिम पेन्पा शेरिंग द्वारा एक अंतर्दृष्टि से पूर्ण प्रभावशाली प्रस्तुति शामिल थी। महामहिम पेन्पा शेरिंग ने तिब्बत के एशिया के जल मीनार होने पर एक व्यापक अवलोकन प्रस्तुत किया और चीन की बांध निर्माण परियोजनाओं के कारण तिब्बत की बिगड़ती पर्यावरणीय चिंता और अरुणाचल प्रदेश की भू-राजनीतिक सुरक्षा पर इसके प्रभावों से तत्काल निपटने की जरूरत पर बल दिया। सत्र का समापन एक अत्यधिक आकर्षक और संवादात्मक प्रश्नोत्तर खंड के साथ हुआ, जिसमें उपस्थित लोगों को सीधे अपने प्रश्नों को प्रस्तुत करने और माननीय सिक्योंग और श्री विजय क्रांति के साथ महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने का अवसर मिला। संवाद ने संगोष्ठी को समृद्ध किया और क्षेत्रीय पारिस्थितिकी तंत्र की भू-राजनीतिक प्रकृति की गहरी समझ को बढ़ावा दिया।

इस कार्यक्रम में तिब्बत संग्रहालय द्वारा आयोजित तिब्बत पर महत्वपूर्ण प्रदर्शनी ने चार चांद लगा दिया। इस प्रदर्शनी का विषय था 'भारत और तिब्बत: प्राचीन संबंध और वर्तमान प्रतिबंध'। इस विषय से प्रतिभागियों को तिब्बत के इतिहास, संस्कृति और वर्तमान में इसके समक्ष उपस्थित चुनौतियों के बारे में गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त हुआ। आईटीसीओ समन्वयक ताशी देकि ने गणमान्य व्यक्तियों को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया, जो भारत और तिब्बत के बीच स्थायी संबंधों का प्रतीक है। यह प्रतीक चिह्न इन संबंधों को मजबूत करने के लिए आईटीसीओ की प्रतिबद्धता को पुष्ट करता है।

संगोष्ठी का समापन कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के सह-संयोजक श्री सुरेन्द्र कुमार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। संगोष्ठी ने तिब्बत में पर्यावरणीय चुनौतियों और भारत की पारिस्थितिकीय सुरक्षा पर उनके प्रभावों के बारे में जागरुकता बढ़ाने के लिए एक मंच के रूप में कार्य किया। इस तरह यह आयोजन पारिस्थितिकीय संरक्षण, क्षेत्रीय स्थिरता और स्थायी शांति के लिए तिब्बत मुद्दे को केंद्र में रखकर चर्चा को बढ़ावा देने के लिए एक प्रमुख मंच के रूप में चिह्नित हुआ।

◆ ०६. अरुणाचल यात्रा के समापन पर सिक्योंग ने पीआरसी की मेगा बांध परियोजनाओं के गंभीर दुष्परिणामों पर कड़ा संदेश दिया

२८ जनवरी, २०२५

तेज़ू, अरुणाचल प्रदेश। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड और पश्चिम बंगाल में स्थित तिब्बती बस्तियों की अपनी आधिकारिक यात्राओं के दूसरे चरण में २७ जनवरी २०२५ को तेजू धारग्येलिंग बस्ती पहुंचे। दिन भर की यात्रा के दौरान उन्होंने बस्ती में १६वें कशाग की परियोजनाओं के निरीक्षण सहित कई कार्यक्रमों में शिरकत की।

सिक्योंग के आगमन पर धारग्येलिंग बस्ती अधिकारी कुंगा जिग्मे और स्थानीय निवासियों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। उनकी यात्रा की शुरुआत रिनपोछे के निवास पर क्यबजे ज़ोग्चेन गनोर रिनपोछे को श्रद्धांजलि देने के साथ हुई। सिक्योंग ने स्थानीय अधिकारियों और गणमान्य व्यक्तियों के साथ संक्षिप्त बैठकें भी कीं। इस दौरान उन्होंने क्षेत्र में रहनेवाले तिब्बतियों को दिए जा रहे निरंतर समर्थन के लिए तिब्बती समुदाय की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त किया।

तिब्बतियों के कल्याण का आकलन करने के लिए सिक्योंग ने बस्ती के भीतर सभी शिविरों का दौरा किया, जिसमें एक नए शिविर के लिए नया स्थल भी शामिल था। इसमें तूतिंग के कई तिब्बती परिवार रहेंगे।

बाद में सिक्योंग ने एक सार्वजनिक सभा को संबोधित किया, जिसमें उन्होंने तिब्बती पठार के भू-राजनीतिक और सामरिक महत्व पर जोर दिया। उन्होंने ब्रह्मपुत्र नदी पर पीआरसी की प्रस्तावित मेगा-बांध परियोजना के बारे में भी संक्षेप में चर्चा की। इस परियोजना से तटवर्ती देशों के निवासियों के लिए गंभीर पारिस्थितिकीय और सामरिक दुष्परिणाम उपस्थित होने की आशंका है। क्षेत्र की भूकंपीय संवेदनशीलता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने चेतावनी दी कि इस तरह के बड़े पैमाने पर बांध निर्माण से जोखिम और बढ़ जाएगा। सिक्योंग ने कहा, 'तिब्बत के डिंगरी क्षेत्र में हाल ही में आया विनाशकारी भूकंप प्राकृतिक आपदाओं की एक कड़ी की याद दिलाता है जो इसके बाद आ सकती हैं।'

इस क्षेत्रीय चिंता से इतर सिक्योंग ने १६वें कशाग के तहत पूर्ण हो चुके और चल रहे दोनों तरह के कार्यों की अद्यतन जानकारी प्रदान की। साथ ही परम पावन दलाई लामा के दूरदर्शी नेतृत्व को भी स्वीकार किया। उन्होंने तिब्बतियों की पुरानी पीढ़ियों के लिए भी गहरी प्रशंसा व्यक्त की, जिनके प्रयासों ने संपन्न तिब्बती निर्वासित समुदाय की स्थापना में मदद मिली। इस संपन्न तिब्बती समुदाय ने एक मजबूत लोकतांत्रिक प्रणाली का निर्माण किया है और मध्यम मार्ग नीति के माध्यम से तिब्बती स्वतंत्रता की बहाली की वकालत करना जारी रखा है।

सिक्योंग ने इस अवसर पर भारत सरकार और यहां के लोगों, विशेष रूप से अरुणाचल प्रदेश के नेतृत्व को उनके अटूट समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने तिब्बती निवासियों से स्थानीय आबादी के साथ सौहार्दपूर्ण संबंधों को बनाए रखने और स्थानीय कानूनों का पालन करने का आग्रह किया।

इसके बाद सिक्योंग पश्चिम बंगाल में तिब्बती बस्तियों के दौरे पर निकल

गए। अरुणाचल प्रदेश की उनकी यात्रा को एक महत्वपूर्ण सफलता माना जाता है, जिसे ईटानगर में 'पर्यावरण और सुरक्षा' विषयक सेमिनार के सफल आयोजन में देखा जा सकता है।

०७. स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने अमेरिकी स्पीकर माइक जॉनसन को बधाई दी

०९ जनवरी, २०२५

धर्मशाला, ०९ जनवरी २०२५। निर्वासित तिब्बती संसद की ओर से खेन्पो सोनम तेनफेल ने अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के स्पीकर माइक जॉनसन को उनकी शानदार जीत और प्रतिनिधि सभा के स्पीकर के रूप में शपथ लेने पर हार्दिक बधाई दी। निर्वासित तिब्बती संसद तिब्बत के भीतर रहनेवाले और दुनिया भर में निर्वासन में रह रहे दोनों ही तरह के तिब्बतियों का प्रतिनिधित्व करती है।

स्पीकर ने लिखा, 'संयुक्त राज्य अमेरिका लंबे समय से तिब्बतियों के अधिकारों का दृढ़ पक्षधर रहा है, जिसने वैश्विक मंच पर हमारी आवाज़ को बुलंद किया है। अपने अटूट समर्थन के माध्यम से संयुक्त राज्य अमेरिका ने लोकतंत्र, मानवाधिकारों और सभी लोगों की मौलिक गरिमा को बढ़ावा देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया है। मैं मध्यम मार्ग दृष्टिकोण के माध्यम से चीन-तिब्बती संघर्ष के समाधान को सुविधाजनक बनाने के लिए आपकी निरंतर प्रतिबद्धता की आशा करता हूँ।'

अंत में स्पीकर तेनफेल ने कहा, 'मुझे आशा है कि अपनी अध्यक्षता में आप अपने लोगों की आकांक्षाओं और दुनिया भर में शांति, न्याय और मानवाधिकार लाने में वैश्विक अपेक्षाओं को पूरा करने में बड़ी सफलता हासिल करेंगे।'

◆ ०८. केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने भारत का ७६वां गणतंत्र दिवस मनाया

२६ जनवरी, २०२५

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) ने आज २६ जनवरी २०२५ की सुबह गंगचेन क्यिशोंग में भारत का ७६वां गणतंत्र दिवस मनाया। भारत में गणतंत्र दिवस १९५० में संविधान लागू होने की याद में मनाया जाता है। इस वर्ष का गणतंत्र दिवस विशेष महत्व रखता है, क्योंकि भारतीय संविधान को अपनाने के ७५ साल पूरे हो रहे हैं। इस वर्ष का थीम रखा गया था- 'स्वर्णिम भारत - विरासत और विकास'।

इस समारोह में शिक्षा विभाग की कलोन (मंत्री) प्रभारी सिक्योंग थारलाम डोल्मा चांगरा, डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेयखांग, सुरक्षा विभाग (डीओएस) की कलोन डोल्मा ग्यारी, सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) की कलोन नोरज़िन डोल्मा, सांसद शेरिंग यांगचेन और सीटीए सचिवों सहित वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए।

ध्वजारोहण समारोह के बाद कार्यवाहक सिक्योंग कलोन थरलाम डोल्मा चांगरा ने मीडिया को संबोधित किया और तिब्बती लोगों की ओर से भारत सरकार और लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

अपने संबोधन में कलोन थरलाम डोल्मा ने कहा, 'प्रत्येक वर्ष २६ जनवरी को मनाया जाने वाला गणतंत्र दिवस उस दिन का प्रतीक है, जब भारत ने १९५० में अपना संविधान अपनाया था। यह अत्यधिक राष्ट्रीय गौरव का दिन है, जो भारत की लोकतांत्रिक नींव और संविधान में दिए गए न्याय, स्वतंत्रता और समता के मूल्यों का प्रतीक है।

उन्होंने निर्वासित तिब्बतियों और तिब्बत के अंदर रहने वाले तिब्बतियों की ओर से आभार व्यक्त करते हुए कहा, 'हम तिब्बती लोग, इस शुभ अवसर पर भारत सरकार और उसके लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हैं। परम पावन १४वें दलाई लामा ने हमेशा हमें भारत के प्रति उसके अटूट समर्थन और निर्वासित तिब्बती समुदाय की मेजबानी के लिए अपना आभार व्यक्त करने की याद दिलाई है।'

कलोन थारलाम डोल्मा ने भारत की लोकतांत्रिक परंपरा पर प्रकाश डाला और कहा कि 'भारत पड़ोसी देशों के लिए लोकतंत्र का एक बेहतरीन उदाहरण है। स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से भारत ने नेतृत्व के सुचारु परिवर्तन और अपने संविधान के विकास को देखा है, जिससे समावेशिता और प्रगति सुनिश्चित हुई है।' उन्होंने विविधता में भारत की एकता की प्रशंसा करते हुए कहा, 'अपनी विशाल आबादी, अपने राज्यों में विविध भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों के साथ, भारत लोकतंत्र की सुंदरता का उदाहरण है और भारत को इस परंपरा को बनाए रखने में गर्व होना चाहिए।'

समारोह का समापन सभी उपस्थित लोगों को चाय और डोनट्स परोसने के साथ हुआ। इससे एक गर्मजोशी भरा और उत्सवी माहौल बना और तिब्बती समुदाय ने इस महत्वपूर्ण अवसर पर भारत के प्रति अपना आभार और एकजुटता व्यक्त की।

◆ ०९. धर्मशाला स्थित सीटीए के नेतृत्व में तिब्बतियों ने डिंगरी भूकंप पीड़ितों के साथ एकजुटता में प्रार्थना सेवा आयोजित की

०८ जनवरी, २०२५

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती और उनसे सहानुभूति रखने वाले

लोग आज ०८ जनवरी की दोपहर धर्मशाला के सुगलाखांग मंदिर में एकत्रित हुए और तिब्बत के शिगात्से के डिंगरी क्षेत्र में आए विनाशकारी भूकंप में मारे गए और घायलों के प्रति अपना समर्थन और एकजुटता व्यक्त करने के लिए प्रार्थना सेवा की।

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के धर्म और संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित इस सामूहिक प्रार्थना की शुरुआत सिक्योंग पेन्पा शेरिंग की संक्षिप्त शोक संवेदना के साथ हुई। विनाशकारी भूकंप के कारण हुए व्यापक विनाश और दुखद जानमाल के नुकसान का संक्षिप्त विवरण देने के बाद सिक्योंग ने स्थिति पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि क्षेत्र में गरीबी उन्मूलन नीतियों के सफल कार्यान्वयन के बारे में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) के बार-बार के दावों के बावजूद व्यापक क्षति- विशेष रूप से पारंपरिक घरों सहित पुराने बुनियादी ढांचे को हुई क्षति चीन के इन दावों की वास्तविक प्रभावशीलता के बारे में गंभीर सवाल खड़े करती है। विनाश स्पष्ट रूप से पीआरसी की झूठी कथानक और जमीन पर वास्तविकता के बीच विसंगति को उजागर करता है।

सिक्योंग ने डिंगरी और आसपास के क्षेत्रों में बसे तिब्बतियों के कल्याण के लिए गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा, 'समुद्र तल से ४००० मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस क्षेत्र को देखते हुए यह अपरिहार्य है कि लोगों को ठंड के गंभीर जोखिमों का सामना करना पड़ेगा और कठोर सर्दियों की स्थिति को सहना होगा। इस पर भी तुर्रा यह कि आने वाले दिनों में तापमान शून्य से नीचे गिरने की आशंका है। तत्काल और प्रभावी बचाव और पुनर्प्राप्ति प्रयासों के बिना, स्थिति और भी विकट हो सकती है।'

सिक्योंग ने तिब्बत में अपने साथी तिब्बतियों के प्रति भी, विशेष रूप से पीड़ितों की सहायता करने के उनके प्रयासों के लिए अपनी हार्दिक प्रशंसा व्यक्त की, जो सोशल मीडिया वीडियो में सामने आए हैं। उन्होंने विश्व भर में निर्वासित तिब्बती समुदायों से अपने-अपने स्थानों पर प्रार्थना सभाएं आयोजित करने, क्षति पर शोक व्यक्त करने तथा प्रभावित लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने तथा उनकी सहनशीलता के लिए प्रार्थना करने का आह्वान किया।

सिक्योंग ने अपने संबोधन के अंत में कहा, 'यह भी तय किया गया है कि परम पावन दलाई लामा कल सुबह ताशी ल्हुनपो मठ में इस दुखद आपदा के पीड़ितों के लिए एक प्रार्थना समारोह की अध्यक्षता करेंगे।'

प्रार्थना समारोह में स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल, सिक्योंग पेन्पा शेरिंग, तिब्बती न्याय आयुक्त तेनज़िन लुंगटोक, कलोन थरलाम डोल्मा चांगरा, कलोन नोरज़िन डोल्मा, चुनाव आयुक्त लोबसंग येशी, लोक सेवा आयुक्त कर्मा येशी, निर्वासित तिब्बती संसद की स्थायी समिति के सदस्य, धर्मशाला में उपस्थित तिब्बती सांसद, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सचिव और सिविल सेवक शामिल हुए।

इसके अलावा, बड़ी संख्या में तिब्बती, हिमालयी समुदायों के सदस्य, स्थानीय सहानुभूति रखने वाले और कुछ पर्यटक अपनी एकजुटता व्यक्त करने के लिए सभा में शामिल हुए।

◆ १०. सुरक्षा मंत्री डोल्मा ग्यारी ने स्टटगार्ट में फ्री डेमोक्रेटिक पार्टी की एपिफेनी बैठक में भाग लिया, पूर्व जर्मन वित्त मंत्री से बातचीत की

०७ जनवरी, २०२

धर्मशाला। ०६ जनवरी २०२५ को केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सुरक्षा विभाग (डीओएस) की मंत्री डोल्मा ग्यारी ने डीओएस के कर्मचारी दावा डोल्मा के साथ जर्मनी के स्टटगार्ट में फ्री डेमोक्रेटिक पार्टी की एपिफेनी बैठक में भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान, कार्यक्रम के मेजबान ने सुरक्षा मंत्री डोल्मा का सौ से अधिक लोगों के सामने परिचय कराया। डोल्मा ग्यारी ने फ्री डेमोक्रेटिक पार्टी के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

बैठक के दौरान डोल्मा ग्यारी ने जर्मनी की फ्री डेमोक्रेटिक पार्टी (एफडीपी) के प्रमुख सदस्यों से मुलाकात की। इनमें पूर्व जर्मन वित्त मंत्री माननीय क्रिश्चियन लिंडनर भी शामिल थे, जिन्होंने तिब्बती मुद्दे के लिए मजबूत समर्थन व्यक्त किया। इसके अतिरिक्त, डोल्मा ने भारत की समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता घनश्याम तिवारी से मुलाकात की।

◆ ११. डॉ. ग्यालो ने तिब्बती संसद का दौरा किया, स्पीकर और डिप्टी स्पीकर से मुलाकात की

०८ जनवरी, २०२५

धर्मशाला। तिब्बती कार्यकर्ता, शैक्षिक समाजशास्त्री और तिब्बत में चीन की आत्मसातीकरण और शिक्षा नीतियों के प्रमुख विशेषज्ञ डॉ. ग्यालो ने ०७ जनवरी २०२५ को निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया और स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल और डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग से मुलाकात की।

उनकी मुलाकात से पहले डॉ. ग्यालो को संसद भवन का दौरा कराया गया और महासचिव सोनम दोरजी द्वारा निर्वासित तिब्बती संसद के विकास, कार्यप्रणाली और संरचना के बारे में जानकारी दी गई।

बैठक के दौरान डॉ. ग्यालो ने बताया कि कैसे परम पावन दलाई लामा के प्रोत्साहन ने उन्हें कड़ी मेहनत करने और तिब्बत की वास्तविक स्थिति के बारे में बोलने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने तिब्बती समाज पर अपने शोध से प्राप्त महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि पर चर्चा की, जिसमें इस बात पर जोर दिया गया कि कैसे यू-त्सांग प्रांत में मठवासी पीठें ऐतिहासिक रूप से तिब्बत में डोटो और डोमी प्रांतों में मठवासी शाखाओं को जोड़ने का काम करती थीं।

डॉ. ग्यालो ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) की धार्मिक रिवाजों पर प्रतिबंधात्मक नीतियों के कारण इस प्राचीन संबंध के लिए खतरों पर भी प्रकाश डाला, जिसमें केंद्रीय मठों और उनकी शाखाओं के बीच संबंधों को तोड़ना भी शामिल है। इसके अतिरिक्त बैठक में तिब्बत में औपनिवेशिक शैली के बोर्डिंग स्कूलों के प्रसार, राग्या शेरिग नोरलिंग शैक्षणिक संस्थान के बंद होने और अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गई।

१२. महालेखा परीक्षक कार्यालय द्वारा भारतीय लोक प्रशासन संस्थान में वैधानिक अनुपालन प्रशिक्षण शुरू

१४ जनवरी, २०२५

नई दिल्ली। यूएसएड और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक संस्थान (एनडीआई) द्वारा प्रायोजित पांच दिवसीय वैधानिक अनुपालन प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन १३ जनवरी २०२५ को भारतीय लोक प्रशासन संस्थान (आईआईपीए), नई दिल्ली में हुआ। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य भारत और नेपाल स्थित महालेखा परीक्षक (ओएजी) मुख्यालयों में पदस्थापित ३३ प्रतिभागियों को अनुपालन और शासन स्तर की आवश्यक जानकारियां उपलब्ध करना है।

उद्घाटन सत्र में आईआईपीए के महानिदेशक और आईएएस (सेवानिवृत्त) श्री सुरेन्द्र नाथ त्रिपाठी और आईआईपीए के रजिस्ट्रार श्री अमिताभ रंजन शामिल हुए। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. सुरभि पांडे ने प्रशिक्षण के उद्देश्यों से प्रतिभागियों को अवगत कराया।

श्री सुरेन्द्र नाथ त्रिपाठी ने अपने उद्घाटन भाषण में प्रबंधन में बदलावों के महत्व को रेखांकित किया और प्रतिभागियों को संगठनात्मक चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान करने के लिए व्यापक परिप्रेक्ष्य में स्थितियों का विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

रजिस्ट्रार श्री अमिताभ रंजन ने तिब्बत के डिंगरी काउंटी में हाल ही में आए भूकंप पर संवेदना व्यक्त करते हुए इसके जानमाल पर पड़े विनाशकारी प्रभाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने सीटीए के लिए विदेशी अंशदान (विनियमन) अधिनियम (एफसीआरए) का पालन करने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि संगठन के सुचारू और प्रभावी संचालन को सुनिश्चित करने के लिए नियमों का अनुपालन महत्वपूर्ण है।

महालेखा परीक्षक कार्यालय की ओर से संयुक्त सचिव कुंचोक वांगडु ने सीटीए लेखा परीक्षकों के लिए इस तरह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए आईआईपीए के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने आईआईपीए की विशेषज्ञता और सीटीए की ऑडिटिंग टीम की क्षमता को मजबूत करने के उसके प्रयासों की सराहना की। यही टीम प्रशासन के भीतर जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञों के नेतृत्व में एफसीआरए संशोधन अधिनियम २०२०, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और माइंड मैट्रिक्स, आईटी अधिनियम और धर्मार्थ समितियों के लिए नियम और ऑडिट और प्रदर्शन ऑडिट जैसे विषयों पर सत्र आयोजित होंगे। कार्यक्रम का समापन १८ जनवरी २०२५ को होगा, जिसमें तनाव और समय प्रबंधन पर केंद्रित एक समापन सत्र होगा। इस प्रशिक्षण से सीटीए की अनुपालन क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है, जिससे बेहतर प्रशासन और परिचालन दक्षता सुनिश्चित होगी।

◆ १३. ईटानगर में कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज– इंडिया की बैठक और 'पर्यावरण और सुरक्षा' पर संगोष्ठी

२९ जनवरी, २०२५

ईटानगर। कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया (सीजीटीसी-आई) ने २४ जनवरी २०२५ को अपने राष्ट्रीय संयोजक श्री आर.के. खिरमे की अध्यक्षता में ईटानगर में बैठक आयोजित की। बैठक में राष्ट्रीय सह-संयोजक श्री अरविंद निकोसे और श्री सुरेंद्र कुमार के साथ सीजीटीसी-आई के क्षेत्रीय संयोजक श्री पेमा वांगडक भूटिया, डॉ. संजय शुक्ला, श्री सौरभ सारस्वत, श्री सुधेश कुमार चंद्रवंशी, श्री संदेश मेश्राम, श्री अमित ज्योतिकर, श्री जे.पी. उर्स करवाटक, श्री एस. अधवन और श्री लोबसांग गेनचेन ने भाग लिया।

कोर ग्रुप की यह बैठक पिछली उप-समिति बैठकों में की गई चर्चाओं और निर्णयों की व्यापक समीक्षा करने के लिए बुलाई गई थी। सदस्यों ने पिछले कुछ महीनों में संशोधित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन का आकलन किया और आगामी अखिल भारतीय तिब्बत समर्थक समूह के आठवें सम्मेलन की योजना और निष्पादन पर विचार-विमर्श किया। बैठक में राज्य और क्षेत्रीय स्तर पर संरचना और कार्यप्रणाली को आवश्यकतानुसार मजबूत बनाने और पुनर्गठित करने के लिए एक मंच प्रदान किया गया। बैठक सभी सदस्यों की सक्रिय भागीदारी के साथ संपन्न हुई, जिसमें तिब्बत में तिब्बतियों की स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए भारत के अटूट समर्थन की पुष्टि की गई।

बैठक में पिछली उप-समिति की चर्चाओं की समीक्षा की गई और संशोधित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन का आकलन किया गया। सदस्यों ने प्रमुख वक्ताओं, एजेंडा विषयों और रसद पर ध्यान केंद्रित करते हुए

अखिल भारतीय तिब्बत समर्थक समूह के आठवें सम्मेलन की योजना बनाई। बेहतर दक्षता के लिए राज्य और क्षेत्रीय संरचनाओं को मजबूत और पुनर्गठित करने के प्रयास किए गए। सुझावों के लिए एक खुले मंच के साथ अतिरिक्त मामलों पर चर्चा की गई। बैठक तिब्बत मुद्दे के पक्ष में अभियान के लिए भारत के मजबूत समर्थन की पुष्टि के साथ संपन्न हुई।

सीजीटीसी- आई के सदस्य गण अरुणाचल प्रदेश की राजधानी ईटानगर स्थित विधानसभा के दोरजी खांडू राज्य कन्वेंशन हॉल में २५ जनवरी को 'पर्यावरण और सुरक्षा' विषय पर आयोजित सेमिनार में भी शामिल हुए। कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज - इंडिया के राष्ट्रीय संयोजक खिरमे ने कोर ग्रुप के उद्देश्यों का अवलोकन प्रस्तुत किया। उन्होंने भारत और तिब्बत के बीच गहरे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों पर जोर दिया और पर्यावरण और सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए साझा प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला।

कोर ग्रुप की बैठक और सेमिनार दोनों में सदस्यों की सक्रिय भागीदारी ने भारत-तिब्बत संबंधों को मजबूत करने और तिब्बतियों के अधिकारों की वकालत करने के लिए सीजीटीसी -आई और उसके सदस्यों की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाया, जिसमें आपसी चिंताओं को दूर करने के लिए सहयोगी प्रयासों पर मजबूत ध्यान दिया गया।

◆ १४. स्कॉटिश संसद में तिब्बती प्रतिनिधि की भूमिका को मान्यता देने वाला प्रस्ताव पेश

१० जनवरी, २०२५

एडिनबर्ग (स्कॉटलैंड), ०९ जनवरी २०२५। स्कॉटिश संसद ने इस सप्ताह स्कॉटिश संसद (एमएसपी) के सदस्य, स्कॉटिश ग्रीन पार्टी और स्कॉटिश संसद में क्रॉस-पार्टी ग्रुप फॉर तिब्बत (सीपीजीटी) के अध्यक्ष रॉस ग्रीर द्वारा प्रस्तुत प्रकाशित किया है। इस प्रस्ताव में निवर्तमान प्रतिनिधि सोनम शेरिंग फ्रैसी के कार्यकाल को मान्यता दी गई और स्कॉटलैंड और तिब्बत के लोगों के बीच बंधन को और मजबूत करने की आशा के साथ प्रतिनिधि शेरिंग यांगकी का स्वागत किया गया।

ग्रीर के प्रस्ताव को अब तक नौ स्कॉटिश सांसदों का समर्थन प्राप्त हुआ है और आने वाले हफ्तों में यह संख्या बढ़ने की संभावना है।

प्रस्ताव सांसदों द्वारा लिखे गये एक संक्षिप्त बयान के रूप में है। यह सांसदों के लिए किसी मुद्दे के बारे में जागरूकता फैलाने का एक तरीका है।

प्रस्ताव का पूरा पाठ इस प्रकार है:

परम पावन दलाई लामा और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के यूके और उत्तरी यूरोप में प्रतिनिधि महामहिम सोनम शेरिंग फ्रैसी (प्रस्ताव संदर्भ एस६एम: १५९८३)

स्कॉटिश संसद महामहिम सोनम शेरिंग फ्रैसी को परम पावन दलाई लामा और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के यूके और उत्तरी यूरोप में प्रतिनिधि के रूप में उनकी सेवा के समापन पर बधाई देती है। यह पद उन्होंने २०१८ से संभाला है। स्कॉटिश संसद में क्रॉस-पार्टी फॉर तिब्बत समूह और स्कॉटलैंड में तिब्बती समुदाय के साथ उनके ईमानदार जुड़ाव की सराहना करती है। साथ ही स्कॉटिश संसद २००१ से २०११ तक निर्वासित तिब्बती संसद के निर्वाचित सदस्य के रूप में और चीन के साथ बातचीत के लिए तिब्बती टास्क फोर्स के सदस्य के रूप में कई दशकों से तिब्बती लोगों के लिए उनकी सेवा को नोट करती है। संसद फ्रैसी ने अपने पूरे जीवन में तिब्बती लोगों के शांतिपूर्ण संघर्ष के लिए जो समर्पण दिखाया है, उसे स्वीकार करती है। दलाई लामा के नए प्रतिनिधि, महामहिम शेरिंग यांगकी का उनके पद पर स्वागत करती है और उनके कार्यकाल के दौरान स्कॉटलैंड और तिब्बत के लोगों के बीच जो मजबूत संबंध है उसे जारी रखने की आशा करती है।

प्रस्ताव का समर्थन सांसद करेन एडम, क्लेयर एडमसन, जैकी डनबर, केनेथ गिब्सन, बिल किड, गिलियन मैके, स्टुअर्ट मैकमिलन, ऑड्रे निकोल और केविन स्टीवर्ट ने किया।

◆ १५. तिब्बत समर्थक समूह ने शिगात्से भूकंप के पीड़ितों के प्रति संवेदना व्यक्त की

०९ जनवरी, २०२५

रीगीकोगु का तिब्बत समर्थक समूह मंगलवार की सुबह तिब्बत के शिगात्से शहर में आए भूकंप से प्रभावित सभी लोगों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता है।

शुरुआती आधिकारिक रिपोर्टों के अनुसार, कम से कम १२६ लोग मारे गए, लगभग २०० घायल हुए और हज़ारों लोगों ने अपने घर खो चुके हैं। हालांकि, भूकंप की तीव्रता (7.१ तीव्रता) और क्षेत्र की विशेषताओं को देखते हुए पीड़ितों की संख्या और भी बढ़ सकती है।

शिगात्से तिब्बत के सबसे महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक है, जहां कई इमारतें ऐसी सामग्रियों से बनी हैं जो मजबूत भूकंपीय कंपन का सामना नहीं कर सकती हैं। इस समय क्षेत्र में रात का तापमान शून्य से १० डिग्री नीचे गिर सकता है, जिससे लोगों के स्वास्थ्य और जीवन को अतिरिक्त खतरा पैदा हो सकता है और बचाव अभियान और अस्थायी आवास की व्यवस्था दोनों जटिल हो सकते हैं।

तिब्बती समर्थक समूह, रिइगीकोगु मांग करता है:-

- चीनी प्राधिकार अंतरराष्ट्रीय मानवीय सहायता संगठनों और स्वतंत्र पत्रकारों के साथ सबसे पारदर्शी सूचना साझाकरण और सहज सहयोग

सुनिश्चित करने की क्षमता का उपयोग करे। सूचना और पहुंच को अवरुद्ध करने से बचाव प्रयासों में काफी कमी आने की आशंका है और पीड़ितों को अतिरिक्त जोखिम उठाना पड़ सकता है।

- एस्टोनियाई सरकार और यूरोपीय संघ को स्थिति पर बारीकी से नज़र रखनी चाहिए और कूटनीतिक और मानवीय सहायता प्रदान करने के लिए तैयार रहना चाहिए। यह भी महत्वपूर्ण है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आपदा की सीमा का स्पष्ट अवलोकन आवश्यक है ताकि यदि आवश्यक हो तो अंतरराष्ट्रीय सहायता के प्रावधान का समन्वय किया जा सके।

- अंतरराष्ट्रीय समुदाय को तुरंत मदद देने के लिए अपनी तत्परता बनाए रखनी चाहिए, क्योंकि भूकंप के बाद झटके आ सकते हैं और मलबे के नीचे फंसे लोगों को बचाने और पीड़ितों को सहायता प्रदान करने के लिए हर घंटे अति उपयोगी है।

- तिब्बत के आध्यात्मिक नेता परम पावन १४वें दलाई लामा ने भी इस दुखद प्राकृतिक आपदा पर गहरा दुख व्यक्त किया है और तिब्बतियों को सांत्वना दी है और उनके लिए प्रार्थनाएं की हैं। भारत के पहाड़ी शहर धर्मशाला में स्थित निर्वासित तिब्बती सरकार ने भी ऐसा ही किया।

- रिइगीकोगु तिब्बत समर्थक समूह कठोर पहाड़ी परिस्थितियों में काम करने वाले बचावकर्मियों की सराहना करता है और मृतकों के रिश्तेदारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है। समर्थक समूह स्थिति पर नजर रखना जारी रखेगा और तिब्बत में जो कुछ हो रहा है और पीड़ितों के लिए आवश्यक अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर ध्यान आकर्षित करने की पूरी कोशिश करेगा। तिब्बत समर्थक समूह के अध्यक्ष जुकु-काले रेड हैं और उपाध्यक्ष कर्मेन जोलर हैं। इस समूह में एनली एकरमैन, एंटी अल्लास, एस्टर कारुसे, एंडो किविबर्ग, एरिक-नाइल्स क्रोस, लियो कुन्नास, टोनिस लुकास, हेन पोलुआस, मारेक रेनास, उर्मास रेनसालु, कालेव स्टोइसस्कु, टार्मो टैम, टोमास उइबो, क्रिस्टो एन. वागा और जाक वाल्गे सदस्य के तौर पर शामिल हैं।

◆ १६. चीन द्वारा नौ तिब्बतियों को कैद करने और गायब करने की जांच कर रहे हैं संयुक्त राष्ट्र के नौ विशेषज्ञ

२२ जनवरी, २०२५

धर्मशाला। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) मानवाधिकार विशेषज्ञों ने चीन सरकार को एक पत्र भेजा है, जिसमें मानवाधिकार उल्लंघन के उसके हालिया इतिहास, विशेष रूप से तिब्बत और पूर्वी तुर्किस्तान (चीन: झिंजियांग) में अधिकार रक्षकों और व्यक्तियों की गैरकानूनी गिरफ्तारी और गायब होने के बारे में गंभीर चिंता जताई गई है। संवाद में बार-बार और लगातार दमन के पैटर्न को उजागर किया गया है। इसमें बिना किसी सूचना के हिरासत में लेना और जबरन गायब करना शामिल है। इसका उद्देश्य कलात्मक, सांस्कृतिक और धार्मिक अभिव्यक्ति को सीमित करना, इन क्षेत्रों में मानवाधिकार रक्षकों को चुप कराना और विरोधी या आलोचनात्मक विचारों को चुप कराना रहा है।' १४ नवंबर २०२४ की तारीख को जारी यह संवाद पत्र १४ जनवरी २०२५ को सार्वजनिक किया गया।

संवाद पत्र में विशेषज्ञों ने पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) की सरकार से नौ तिब्बतियों के ठिकाने और कुशल क्षेम के बारे में जानकारी देने का आह्वान किया। गायब कर दिए गए तिब्बतियों में- सेदो, कोरी, चुगदार, गेलो, भामो, लोबसंग समतेन, लोबसंग त्रिनले, वांगकी और शेरिंग ताशी शामिल हैं। संचार में अन्य मानवाधिकार रक्षकों, पत्रकारों, वकीलों, कार्यकर्ताओं और जातीय या धार्मिक अल्पसंख्यकों का भी उल्लेख किया गया है जिन्हें गैरकानूनी रूप से कैद किया गया है और गायब कर दिया गया है।

इसके अलावा, विशेषज्ञों ने चीन से उपरोक्त व्यक्तियों की गिरफ्तारी, हिरासत, आरोप और सजा के तथ्यों और कानूनी आधार के बारे में सवाल किए हैं। साथ ही यह भी पूछा कि क्या उनके मामलों को 'गोपनीय' के तौर पर वर्गीकृत किया गया था और मुकदमे बंद कर दिए गए थे। उन्होंने बताया कि कैसे ये कार्रवाई चीन के अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दायित्वों के अनुरूप थी।

कई तिब्बतियों को वर्षों से पुलिस पूछताछ के दौरान गंभीर यातना और अमानवीय व्यवहार का सामना करना पड़ा है। इनमें से कई की तो इन यातनाओं के कारण मृत्यु भी हो गई हैं। साथ ही पर्याप्त चिकित्सा देखभाल की कमी भी है। विशेषज्ञों ने पीआरसी सरकार से न्याय में किसी भी तरह की चूक, मुकदमे से पहले और मुकदमे के बाद हिरासत में दुर्व्यवहार, साथ ही हिरासत में मौत के मामलों की जांच के लिए अपने प्रयासों के बारे में विस्तृत जानकारी देने का आह्वान किया है।

संचार में ऊपर बताए गए पांच तिब्बतियों के मामलों का उल्लेख किया गया है, जिन्हें अगस्त २०२२ में धूपबत्ती जलाने और प्रार्थना करने जैसी धार्मिक गतिविधियों के लिए गिरफ्तार किया गया था। विशेषज्ञों ने लिखा, 'उनके साथ जुड़े लोगों को उन्हें खाना भेजने की अनुमति नहीं थी।' इसमें हिरासत में चुगदार की मौत के मामले का भी उल्लेख किया गया है, जहां कथित तौर पर उन्हें बुरी तरह पीटा गया और अन्य प्रकार की यातनाएं और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा।

इसके अतिरिक्त, संचार पत्र में हाल ही में यानी सितंबर २०२४ में चार तिब्बतियों- लोबसंग समतेन, लोबसंग त्रिनले, वांगकी और शेरिंग ताशी की गलत तरीके से की गई गिरफ्तारी पका मुद्दा उठाया गया है। इन चारों को उनकी कुशलता, ठिकाने और उन पर लगाए गए आरोपों के बारे में कोई जानकारी दिए बिना गिरफ्तार कर लिया गया। विशेषज्ञों ने उल्लेख किया है कि २०११ में कैद किए गए लोबसंग समतेन और लोबसंग त्रिनले 'कीर्ति मठ की धार्मिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं।'

हाल के वर्षों में पीआरसी सरकार ने तिब्बत में धार्मिक स्वतंत्रता पर अपना दमन चक्र तेज कर दिया है। यहां तक कि धार्मिक विश्वास की सबसे बुनियादी अभिव्यक्ति को भी अपराध बना दिया गया है। तिब्बतियों को धूपबत्ती जलाने, प्रार्थना करने या परम पावन दलाई लामा की तस्वीरें रखने जैसे साधारण कामों के लिए भी गिरफ़्तार किया जाता है और हिरासत में लिया जाता है। पीआरसी सरकार की व्यापक निगरानी प्रणाली धार्मिक गतिविधियों पर नज़र रखती है, जबकि अधिकारी 'प्रबंधन समितियों' और अनिवार्य राजनीतिक शिक्षा सत्रों के माध्यम से भिक्षु मठों और भिक्षुणी विहारों पर कड़ा नियंत्रण बनाए रखते हैं।

पीआरसी सरकार के 'धर्म के चीनीकरण' के कारण धार्मिक स्थलों और मठों को नष्ट किया गया है, भिक्षुओं और भिक्षुणियों को जबरन स्थानांतरित किया गया है और धार्मिक आचार्यों को मनमाने ढंग से हिरासत में लिया गया है। रोजमर्रा की धार्मिक गतिविधियों को अपराध की श्रेणी में रखना अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार मानकों का गंभीर उल्लंघन है और तिब्बती धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान को मिटाने की चीन की व्यापक रणनीति को दर्शाता है।

पत्र पर संयुक्त राष्ट्र के विशेष प्रतिवेदकों द्वारा संयुक्त रूप से हस्ताक्षर किए गए थे। इनमें जबरन या अनैच्छिक गायब होने पर कार्य समूह की अध्यक्ष और प्रतिवेदक गैब्रिएला सिट्रोनी, मनमाने ढंग से हिरासत पर कार्य समूह के संचार मामले की उपाध्यक्ष गन्ना युडकिव्स्का, विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार के प्रचार और संरक्षण पर विशेष प्रतिवेदक आइरीन खान, शांतिपूर्ण सभा और संघ बनाने की स्वतंत्रता के अधिकारों पर विशेष प्रतिवेदक जीना रोमेरो, मानवाधिकार रक्षकों की स्थिति पर विशेष प्रतिवेदक मैरी लॉलर, न्यायाधीशों और वकीलों की स्वतंत्रता पर विशेष रैपोर्टेयर मार्गरेट सैटरथवेट, अल्पसंख्यक मुद्दों पर विशेष रैपोर्टेयर निकोलस लेवराट, धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता पर विशेष रैपोर्टेयर नाज़िला घनेया और महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ भेदभाव के खिलाफ कार्य समूह की अध्यक्ष और रैपोर्टेयर लौरा न्यिरिंकिंदी शामिल थीं।

---

१७. जेल से रिहा होने के बाद तिब्बती लेखक पर कड़ी निगरानी

३०.०१.२०२५ आरएफए तिब्बतन

दलाई लामा को प्रार्थना अर्पित करने और निर्वासन में रह रहे तिब्बतियों से संपर्क करने के आरोप में पालगोन को २०२२ में गिरफ्तार किया गया था।

निर्वासन में रह रहे तिब्बतियों से संपर्क करने और दलाई लामा को प्रार्थना अर्पित करने के आरोप में कैद किए गए एक तिब्बती लेखक और प्राथमिक विद्यालय के पूर्व शिक्षक को नवंबर २०२४ में जेल से रिहा कर दिया गया। लेकिन उन्हें कड़ी निगरानी में रखा गया है।

३२ वर्षीय पालगोन को अगस्त २०२२ में किंगहाई प्रांत के गोलोग तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर के पेमा काउंटी में उसके घर से गिरफ्तार किया गया था। उन्होंने दो साल से अधिक समय जेल में बिताया।

सूत्रों ने प्रतिशोध के डर से नाम न छापने की शर्त पर रेडियो फ्री एशिया को बताया कि रिहाई के बाद से उन्हें दूसरों से संपर्क करने से प्रतिबंधित कर दिया गया है।

पहले सूत्र ने आरएफए को बताया, 'पिछले दो वर्षों में उन्हें कहां हिरासत में रखा गया था और साथ ही उनकी वर्तमान स्वास्थ्य स्थिति कैसी है, इसके बारे में विवरण अज्ञात है, क्योंकि अधिकारियों द्वारा कड़े प्रतिबंध लगाए गए हैं।'

चीनी सरकार अक्सर दलाई लामा के लिए प्रार्थना करने और उनकी तस्वीरें रखने, तिब्बत में धार्मिक स्वतंत्रता को सीमित करने और तिब्बती बौद्ध धर्म के सभी पहलुओं को नियंत्रित करने के लिए तिब्बतियों को गिरफ्तार करती है।

सरकार तिब्बत के अंदर रहने वाले तिब्बतियों को निर्वासन में रहने वाले तिब्बतियों से संवाद करने से भी रोकती है। सरकार का कहना है कि यह राष्ट्रीय एकता को कमजोर करता है।

तिब्बतियों ने बीजिंग द्वारा लेखक की रिहाई के बाद भी निगरानी की निंदा की है। उनका कहना है कि चीनी अधिकारी उनके मानवाधिकारों का उल्लंघन कर रहे हैं और उनकी धार्मिक, भाषाई और सांस्कृतिक पहचान को मिटाने की कोशिश कर रहे हैं।

सूत्रों ने यह भी कहा कि प्रमुख व्यावसायिक तिब्बती निजी स्कूल गंगजोंग शेरिग नोरलिंग के स्नातक पालगोन को जुलाई २०२४ में चीनी सरकार ने जेल में बंद कर दिया था। उन्होंने अपनी गिरफ्तारी से पहले विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों और ऑडियो चैट समूहों पर कई साहित्यिक रचनाएं लिखी थीं।

हालांकि, उनके लेखन और पोस्ट को सोशल मीडिया साइटों से हटा दिया गया है और ऑनलाइन माध्यम से उनको नहीं खोजा जा सकता हैं। उन्होंने कहा कि उनके सोशल मीडिया अकाउंट ब्लॉक कर दिए गए हैं।

ह्यूमन राइट्स वॉच ने अपनी 'विश्व रिपोर्ट २०२५' में उल्लेख किया है कि प्राधिकारी २०२४ में तिब्बत में रहने वाले तिब्बतियों को मनमाने ढंग से ऑनलाइन अस्वीकृत सामग्री पोस्ट करने या क्षेत्र के बाहर के तिब्बतियों के साथ ऑनलाइन संपर्क रखने के लिए गिरफ्तार कर सकते हैं।

◆ १८. तिब्बत में भूकंप: प्राकृतिक नहीं, मानव निर्मित आपदा

२६ जनवरी, २०२५ डॉ. सावांग ग्यालपो आर्य

वैज्ञानिकों का कहना है कि खनन और बड़े पैमाने पर बांध निर्माण सहित मानवीय गतिविधियां तिब्बत में भूकंप का कारण बनती हैं, जिससे अरबों लोगों पर इसका प्रभाव और भी बढ़ जाता है।

चीन की तालाबंदी और सूचना पर लगी नाकाबंदी के लंबे अंतराल के बाद हाल ही में आए भूकंप ने अचानक तिब्बत को मीडिया के ध्यान में ला दिया है। भूकंप ने कई लोगों की जान ले ली, हालाँकि आधिकारिक रिपोर्ट में केवल १२६ लोगों की मौत बताई गई है। हालांकि, वास्तविक आंकड़ा इससे कहीं ज़्यादा होने का अनुमान है। इस आपदा ने लगभग ४५,००० लोगों को विस्थापित किया और कई लोग अभी भी लापता हैं।

यह भूकंप चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) के नेतृत्व और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को तिब्बत में हो रही घटनाओं के बारे में एक स्पष्ट संदेश है। पिछले कुछ वर्षों में तिब्बती पठार पर लगातार भूकंप और भूस्खलन हुए हैं। चीनी अधिकारी इन भूकंपों को भारतीय और यूरेशियन टेक्टोनिक प्लेटों के टकराव के कारण आई प्राकृतिक आपदाओं के रूप में देखते हैं। जबकि कई लोग उन्हें तिब्बती पठार पर बड़े पैमाने पर बांध और खनन गतिविधियों से प्रेरित मानव निर्मित आपदाएं मानते हैं।

यह शोध पत्र जांच करेगा और पता लगाएगा कि तिब्बती पठार ऐसी प्राकृतिक आपदाओं का सामना क्यों कर रहा है, संभावित कारण क्या है और उपाय क्या है।

क्या हुआ?

०७ जनवरी की सुबह दक्षिण-पश्चिमी तिब्बत में ७.१ तीव्रता का एक बड़ा भूकंप आया, जिसके बाद कई झटके आए। इसका केंद्र तिब्बत की राजधानी ल्हासा से कोई २७० किलोमीटर दूर शिगात्से प्रान्त के डिंगरी काउंटी में था।

भूकंप ने कई लोगों की जान ले ली और क्षेत्र और उसके आसपास के इलाकों को तबाह कर दिया। भूकंप की तीव्रता इतनी अधिक थी कि नेपाल, भारत और भूटान में भी झटके महसूस किए गए। कहा जा रहा है कि यह भूकंप हिमालय क्षेत्र में १०० वर्षों में आए सबसे भयानक झटकों में से एक है।

चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता से नेपाल, भारत और अन्य देशों से मदद के बारे में पूछा गया। जवाब में उन्होंने बस इतना कहा, 'वर्तमान में चीन की खोज, बचाव और चिकित्सा देखभाल सहायता की पूरी गारंटी है। हम अंतरराष्ट्रीय समुदाय से देखभाल और समर्थन के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।' प्रवक्ता इस प्रकार सीधे सवाल को टाल गए।

परम पावन दलाई लामा ने प्रभावित लोगों के लिए प्रार्थना की। साथ ही केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के नेतृत्व ने राहत कार्य के कुशल निष्पादन में चीन के सहयोग का अनुरोध किया। हालांकि, चीनी प्रवक्ता गुओ जियाकुन ने एक विशिष्ट चीनी भेड़िया कूटनीति के तहत दलाई लामा और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की अलगाववादी कह कर निंदा की।

ग्लोबल टाइम्स का चौंकाने वाला 'स्पिन'

ग्लोबल टाइम्स की संपादकीय टिप्पणी और भी तीखी और इस प्रकार थी: 'पश्चिमी मानवाधिकारों का वह लेंस जिसे कुछ लोगों ने ज़िज़ांग पर थोपने की कोशिश की है, वह अनिवार्य रूप से तथ्यों से अलग हो जाएगा और अंततः पूरी तरह से ढह जाएगा।' यह पूरी तरह से अप्रासंगिक और संदर्भ से बाहर की टिप्पणी है जो सीसीपी के अपराध को उजागर करती है।

संपादकीय में आगे दावा किया गया है:

'भूकंप के ठीक १० मिनट बाद बचाव हेलीकॉप्टर आसमान में थे। आधे घंटे से भी कम समय में टीम ने मलबा हटाना शुरू कर दिया था। एक दिन से भी कम समय में स्थानीय नेटवर्क, सड़कें और बिजली की आपूर्ति बहाल कर दी गई और अधिकांश प्रभावित निवासियों को गर्म टेंट या प्रीफ़ैब घरों में आश्रय दिया गया था, जहां उन्हें दिन में तीन बार गर्म भोजन मिल रहा था।'

यह बहुत ही सराहनीय और पेशेवर है। लेकिन अगर वे जो कहते हैं वह सच है तो चीन पड़ोसी तिब्बतियों और अंतरराष्ट्रीय मीडिया और स्वयंसेवकों को तथ्यों को देखने और जाने की अनुमति क्यों नहीं दे रहा है?

स्थिति की वास्तविकता यह है कि सीसीपी ने इंटरनेट कनेक्शन बंद कर दिए हैं और जानकारी साझा करने के लिए २१ से अधिक स्थानीय निवासियों को गिरफ्तार कर लिया है। इसने प्रभावित क्षेत्रों में व्यक्तियों और संगठनों के प्रवेश पर भी रोक लगा दी है। निवासियों को धमकाया जा रहा है कि वे बाहरी दुनिया को तस्वीरें और जानकारी न भेजें।

बुनियादी ढांचे पर चीन का ध्यान

भूकंप पर चीन की पहली प्रतिक्रिया थी, 'तिब्बत भूकंप से बांधों या जलाशयों को कोई नुकसान नहीं हुआ।' भूकंप के बाद साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट के अनुसार, चीन के जल संसाधन मंत्रालय ने कहा कि निरीक्षण में क्षेत्र में बांधों या जलाशयों पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

यह संक्षेप में सीसीपी के डर और अपराधबोध को दर्शाता है। उन्हें लोगों के जीवन से ज़्यादा बांधों की चिंता है। फिर भी, बांधों पर असर पड़ना तय

है। यही कारण है कि चीन ने बगल के तिब्बतियों और अंतरराष्ट्रीय स्वयंसेवकों को तिब्बत में जाने की अनुमति नहीं दी।

भूकंप के एक हफ़्ते बाद यानी १६ जनवरी को चीन ने अपने द्वारा निरीक्षण किए गए १४ जलविद्युत बांधों में से पांच को नुकसान पहुंचने की बात कबूल की। इसने छह गांवों से लगभग १५०० लोगों को निकालकर ऊंची जगहों पर पहुंचाया गया। लेकिन यह हिमशैल का सिरा हो सकता है।

हिमालय क्षेत्र में भूकंप क्यों?

नेपाल और तिब्बत को भारतीय और यूरेशियन प्लेटों के सक्रिय भूकंपीय क्षेत्रों और दोष रेखाओं पर कहा जाता है। भारतीय टेक्टोनिक प्लेट धीरे-धीरे उत्तर की ओर बढ़ रही है और यूरेशियन प्लेट को पांच सेंटीमीटर प्रति वर्ष की दर से धकेल रही है। इससे नीचे की धरती पर मजबूत दबाव बन रहा है, जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में भूकंप आ रहे हैं। कई लोग इस क्षेत्र में भूकंपों का कारण भारतीय और यूरेशियन प्लेटों के इसी टकराव को मानते हैं। यह हिमालयी क्षेत्र को बहुत ही अनिश्चित और भूकंप-प्रवण क्षेत्र में रखता है।

हालांकि उपरोक्त स्पष्टीकरण भूकंप के प्रमुख कारणों में से एक हो सकता है, लेकिन यह झटकों का एकमात्र स्रोत नहीं है। पिछले कुछ वर्षों में लगातार और बार-बार भूकंप एक और कहानी बताते हैं। २००८ में पूर्वी तिब्बत के न्गाबा क्षेत्र में ७.९ तीव्रता के भूकंप में लगभग १२,००० लोग मारे गए थे। २०१० में पूर्वी तिब्बत के क्यगुडो (युशु) में ७.० तीव्रता का भूकंप आया। नेपाल २०१५ में आए ७.८ तीव्रता के भूकंप का केंद्र था, जिसने ९००० से अधिक लोगों की जान ले ली और पांच लाख से अधिक घर नष्ट हो गए। मई २०२१ में ७.३ तीव्रता के भूकंप ने दक्षिणी किंघई को हिला दिया। रिपोर्ट कहती है कि चीन के सीसीटीवी के अनुसार, 'शिगात्से भूकंप केंद्र के २०० किलोमीटर के भीतर पिछले पांच वर्षों में तीन या उससे अधिक तीव्रता के २९ भूकंप आए हैं।' इसने यह भी बताया कि १९५० के बाद से ल्हासा ब्लॉक में छह या उससे अधिक तीव्रता के २१ भूकंप आए हैं, जिनमें २०१७ का मेनलिंग भूकंप ६.९ तीव्रता का सबसे बड़ा था।

तिब्बत ही क्यों?

तिब्बत में ही अचानक इतने भूकंप क्यों आ रहे हैं? तिब्बतियों ने पहले कभी इतनी बार भूकंप का अनुभव नहीं किया है। मेरे माता-पिता ने कभी भी भूकंप का अनुभव करने के बारे में कुछ नहीं कहा, और यहां तक कि प्राचीन तिब्बती लोकगीतों और लोककथाओं में भी भूकंप का शायद ही कभी उल्लेख किया गया हो। पिछले कुछ वर्षों में भारतीय और यूरेशियन प्लेटें बार-बार क्यों टकराने लगी हैं? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जिस पर हम सभी को विचार करना चाहिए।

भारतीय और यूरेशियन प्लेटें इसमें भूमिका निभा सकती हैं, पर हम अन्य कारकों को भी खारिज नहीं कर सकते। वैज्ञानिकों सहित कई लोग बार-बार के भूंकप के लिए मानवीय कारकों को जिम्मेदार मानते हैं जैसे कि चीन द्वारा तिब्बती नदियों पर बांध बनाना, वनों की कटाई, अत्यधिक खनन और तिब्बती पठार का सैन्यीकरण।

चीन ने १९५० से तिब्बत पर कब्जा कर रखा है। तब से चीन हमेशा तिब्बत को शोषण के लिए एक उपनिवेश और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में अपने आधिपत्य को आगे बढ़ाने के लिए एक सैन्य अड्डे के रूप में देखता रहा है। इन गतिविधियों से होने वाले व्यवधान भूकंप का कारण बनते हैं, जिससे ये मानव निर्मित आपदाएं बन जाती हैं और सीसीपी शासन इनके लिए जिम्मेदार है।

अब सीसीपी शासन द्वारा तबाह और अतिशोषित तिब्बती पठार ने विरोध करना शुरू कर दिया है तथा क्षेत्र में मंडरा रहे विनाशकारी संकट तथा पड़ोसी राज्यों के लिए घातक और विनाशकारी नतीजों के बारे में खतरे की घंटी बजा दी है।

एशिया में बहने वाली नदियां

विश्व बैंक के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. इस्माइल सेरागेल्डिन ने सही कहा है कि अगला विश्व युद्ध पानी के लिए होगा। अगर तिब्बत में चीन जो कर रहा है, उसे कोई संकेत माना जाए तो यह सच है और खतरा बहुत निकट है।

तिब्बत को एशिया का जल मीनार कहा जाता है। एशिया की दस सबसे बड़ी नदियां और उनकी सहायक नदियां १.८ अरब से ज़्यादा लोगों को पेयजल प्रदान करती हैं। ये सब तिब्बती पठार से निकलती हैं। तिब्बत में उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों के बाद सबसे ज़्यादा ग्लेशियर (४६,०००) और पर्माफ्रॉस्ट भी हैं। अक्सर इसे तीसरा ध्रुव और दुनिया की छत कहा जाता है।

चीन इन नदियों पर विशाल बांध बनाकर नियंत्रण करना चाहता है। अगर वह ऐसा करता है तो वह तटवर्ती देशों पर अपना आधिपत्य जमा लेगा।

तिब्बत की चार प्रमुख नदियां: तिब्बत की चार प्रमुख सेंगे खाबाब, लैंगचेन खाबाब, माजा खाबाब और तचोग खाबाब नदियां भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश की सिंधु, सतलुज, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियां हैं। सिंधु नदी भारत, पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान में २६.८ करोड़ लोगों को पेयजल प्रदान करती है। यह नदी पहले से ही चीनी बांधों के कारण सूख रही है।

भारत का ब्रह्मपुत्र नद पश्चिमी तिब्बत में तचोग खाबाब के नाम से निकलता है। यह दक्षिण-पूर्व भारत-तिब्बत सीमा के साथ १६२५ किलोमीटर बहता है। यह क्यीचू नदी और अन्य नदियों से जुड़ता है और यारलुंग संगपो (ब्रह्मपुत्र) के रूप में पूर्व में आगे बहता है। फिर मेटोक काउंटी में यह एक तीव्र यू-टर्न लेता है और भारत की ओर अरुणाचल

प्रदेश और बांग्लादेश में उतरता है। तिब्बत में अपने उद्गम स्रोत से बंगाल की खाड़ी तक २९०० किलोमीटर बहनेवाला यह नद भारत के मीठे जल संसाधनों का ३०% हिस्सा प्रदान करता है। (आईसीआईएमओडी २०/०३/२०२४)

ब्रह्मपुत्र और अन्य नदियों पर बांध

चीन ने इन नदियों के जल प्रवाह को नियंत्रित करने के लिए कई बांध बनाए हैं। ये रन-ऑफ-द-रिवर बांध परियोजनाएं नहीं हैं, जैसा कि चीन अंतरराष्ट्रीय समुदाय को विश्वास दिलाना चाहता है। सीसीपी इन बांधों के पीछे जलविद्युत की अपनी भूख मिटाने से कहीं अधिक भयावह राजनीतिक और आधिपत्यवादी एजेंडा रखती है।

इसने सिंधु और सतलुज नदियों पर बांध बनाए हैं। यारलुंग सांगपो (ब्रह्मपुत्र नदी) पर जांगमू, यमद्रोक, पंगडुओ, झिकोंग, जियाचा और लाल्हो के छह प्रमुख बांधों से संतुष्ट नहीं होकर, चीन मेटोक क्षेत्र में अपने १३७ अरब डॉलर के मेगा-बांध परियोजना पर काम कर रहा है। यह वह महत्वपूर्ण बिंदु है जहां तिब्बती नदी भारत और बांग्लादेश में बहने के लिए एक तेज यू-टर्न लेती है। परियोजना की लागत दुनिया भर में अन्य सभी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं से अधिक होने की सूचना है। यहां तक की इसकी लागत चीन के थ्री गॉर्जेस बांध से अधिक है, जिसे वर्तमान में दुनिया का सबसे बड़ा बांध माना जाता है।

चीन का कहना है कि तिब्बती पठार के लिए स्वच्छ ऊर्जा की खोज के साथ-साथ बांध निर्माण भी जारी है। लेकिन चीनी भूविज्ञानी फैन ज़ियाओ का कहना है, 'यारलुंग नदी के आसपास के क्षेत्र में बहुत कम लोग रहते हैं और इतनी बिजली की ज़रूरत नहीं है कि इसकी अर्थव्यवस्था छोटी होनी चाहिए।'

अकेले जांगमू बांध से सालाना २.५ अरब किलोवाट बिजली पैदा होती है। यारलुंग सांगपो पर अन्य बांधों से पनबिजली के साथ इसे मिलाकर कुल उत्पादन बहुत ज़्यादा है।

फिर चीन को भूवैज्ञानिक आपदा के बड़े जोखिम के बावजूद ३०० अरब किलोवाट क्षमता वाले इस मेटोक बांध की क्या ज़रूरत है? चीनी भूविज्ञानी फैन ज़ियाओ ने बीजिंग की विवादास्पद मेगा-बांध बनाने की योजना के खिलाफ़ चेतावनी दी। साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट में उन्होंने इसे भूवैज्ञानिक रूप से अस्थिर जैव विविधता हॉटस्पॉट के रूप में उद्धृत किया है जो अपूरणीय पर्यावरणीय क्षति का कारण बन सकता है। (बिजनेस स्टैंडर्ड ०७ जनवरी, २०२५)।

मेकांग को हथियार बनाएगा चीन

तिब्बत की नदियां- ड्रिचू और माचू, यांग्त्से और हुआंगहो पीली नदियों का स्रोत हैं, जो चीनी सभ्यता का उद्गम स्थल हैं। तिब्बत की ग्याल्मो न्युलचू नदी चीन, म्यांमार और थाईलैंड में नुजियांग, थालवीन और सालवीन के रूप में बहती है। तिब्बत की ज़ाचू नदी प्रसिद्ध मेकांग नदी का स्रोत है जो चीन, म्यांमार, लाओस, थाईलैंड, कंबोडिया और वियतनाम में बहती है और पूरे क्षेत्र के लोगों को ताज़ा पानी और आजीविका के स्रोत प्रदान करती है।

अकेले मेकांग नदी पर चीन ने ११ विशाल बांध बनाए हैं, जिनमें विशाल थ्री गॉर्जेज बांध भी शामिल है। कई और के लिए योजना अभी भी बनाई जा रही है। ५००० किलोमीटर लंबी मेकांग नदी कभी-कभी निवासियों को चेतावनी देती रहती है। इसी से यह हताश प्रयासों में समाचारों में आती है कि यह सूख रही है और मर रही है। इसके अलावा मेकांग नदी के ऊपरी हिस्से पर बांधों का निर्माण निचले देशों के साथ किसी भी परामर्श या सूचना साझा किए बिना किया गया।

तिब्बत की नदियों पर पूर्ण नियंत्रण के साथ चीन निचले इलाके के देशों पर भू-राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए 'खुले और बंद नल की नीति' को अपनाता है। बांधों को खोलने या बंद करने की धमकी और बाढ़ या सूखे का कारण बनने के लिए पानी का हथियार के तौर पर इस्तेमाल करके नदी के किनारे के देशों को डरा-धमकाकर चीनी हुक्म के आगे झुकने के लिए मजबूर किया जाता है। इससे इन क्षेत्रों की सरकार और लोग सीसीपी के हुक्म और दया पर छोड़ दिए जाते हैं।

पर्यावरण और मानवीय क्षति

तिब्बती पठार पर चीन के बांध बनाने के उन्माद के बारे में कहा जाता है कि यह मुख्य भूमि की जल की कमी और जलविद्युत की भूख को मिटाता है। यह शी जिनपिंग की तिब्बत को 'पश्चिम-पूर्व विद्युत संचरण परियोजना' के लिए आधार बनाने की नीति से स्पष्ट है। हालांकि यह तिब्बत, चीन और अन्य पड़ोसी देशों को भूकंप, बाढ़ और बड़े पैमाने पर पर्यावरणीय क्षति के निरंतर बड़े जोखिम में छोड़ देता है।

बांध बनाने के इस उन्माद का एक और मुख्य और महत्वपूर्ण कारण निचले देशों पर भू-राजनीतिक लाभ प्राप्त करना है। यह खतरनाक है। यह सभी दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों की सुरक्षा को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करेगा। अंतरराष्ट्रीय समुदाय को चीन को बांधों को हथियार बनाने से रोकना चाहिए।

एक तीसरा कारण भी है: जबरन स्थानांतरण। ये बांध निर्माण और खनन परियोजनाएं कम्युनिस्ट शासन को विकास और बेहतर आवास के बहाने तिब्बतियों को उनके पारंपरिक घरों और बस्तियों से जबरन स्थानांतरित करने का बहाना प्रदान करती हैं। चीन ने अपने जल और खनिज संसाधनों का दोहन करने के लिए बड़ी संख्या में तिब्बतियों को जबरन स्थानांतरित किया है। यह प्रथा उन लोगों को अनिश्चित स्थिति में छोड़ देती है और

उन्हें अल्प सरकारी सब्सिडी पर निर्भर रहना पड़ता है।

ह्यूमन राइट्स वॉच का कहना है कि २००० से अब तक ९,३०,००० से अधिक तिब्बतियों को विस्थापन के लिए मजबूर किया गया है।

विशाल बिजली उत्पादन की लागत

तिब्बत नीति संस्थान के एक शोध फेलो डेचेन पाल्मो लिखते हैं, 'पिछले सात दशकों में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना ने ८७,००० से अधिक बांधों का निर्माण किया है। सामूहिक रूप से वे ३२५.२६ गीगावॉट बिजली पैदा करते हैं, जो ब्राजील, अमेरिका और कनाडा की संयुक्त क्षमता से अधिक है। दूसरी ओर इन परियोजनाओं के कारण २.३ करोड़ से अधिक लोगों को विस्थापित होना पड़ा है।'

फरवरी २०२४ में तिब्बतियों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय की अपील और विरोध के बावजूद चीन ने सिचुआन के खाम क्षेत्र के डेरगे में कामटोक बांध का निर्माण कर दिया। तिब्बत वॉच के अनुसार, बांध से नदी के दोनों किनारों से १२ गांवों को स्थानांतरित करने की आशंका थी, जिससे लगभग ४२८७ लोग प्रभावित हुए।

हम अभी भी नहीं जानते कि उस समय गिरफ्तार किए गए १००० लोगों का क्या हुआ।

कुछ वैज्ञानिकों ने पहले आए भूकंपों के लिए बड़े बांधों को जिम्मेदार ठहराया है। सबसे कुख्यात बात यह है कि २००८ में वेंचुआन भूकंप में जिपिंगु बांध की भूमिका सवालों के घेरे में है।

२०१० में अंतरराष्ट्रीय नदियों के सलाहकार नोट के अनुसार, 'यांग्त्से नदी के ऊपरी हिस्से में स्थित युशू काउंटी, चीन में योजनाबद्ध बांध निर्माण का केंद्र है। जैसा कि हम दुनिया भर में १०० से अधिक प्रलेखित मामलों से जानते हैं, ऊंचे बांध भूकंप को आमंत्रित कर सकते हैं। मई २००८ के विनाशकारी सिचुआन भूकंप को जिपिंगपु बांध से जोड़ने के पुख्ता सबूत हैं।'

टिक-टिक करता टाइम बम

भू-रणनीतिकार ब्रह्मा चेलानी लिखते हैं, 'नई बांध परियोजना चीन को सीमा पार नदी के प्रवाह पर नियंत्रण प्रदान करेगी, जिससे उसे भारत के विशाल और तिब्बत-सीमावर्ती अरुणाचल प्रदेश पर अपने क्षेत्रीय दावे का लाभ उठाने का मौका मिल जाएगा। अरुणाचल ताइवान के क्षेत्रफल से लगभग तीन गुना बड़ा है।'

ऑस्ट्रेलियाई सामरिक नीति संस्थान ने रिपोर्ट की है कि 'चीन चुपचाप और अपरिवर्तनीय रूप से भारत के साथ विवादित क्षेत्रों सहित सीमावर्ती क्षेत्रों पर अपने नियंत्रण को वैध बनाने के लिए काम कर रहा है।' चीन क्षेत्रीय विवादों का मुकाबला करते हुए बेहतर बातचीत की स्थिति हासिल करने के लिए भारत, नेपाल और भूटान के साथ सीमावर्ती क्षेत्रों को स्थानांतरित और आबाद कर रहा है।

पेंटागन की २०२१ की वार्षिक रिपोर्ट से पता चला है कि चीन ने भारत के साथ विवादित क्षेत्र के भीतर आवास परिसरों का निर्माण किया है। ये परिसर अरुणाचल प्रदेश के पास मेगा-बांध परियोजना के करीब हैं। यह वही सलामी-स्लाइसिंग रणनीति है जिसका इस्तेमाल चीन दक्षिण-पूर्व चीन सागर में अतिक्रमण करके क्षेत्रों पर दावा करने के लिए करता है। इसने जापान और फिलीपींस सहित हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लोगों को हाई अलर्ट पर रखा है।

कुछ रिपोर्टों के अनुसार, १९५४ से २००३ के बीच देश के ८५,३०० बांधों में से ३४८४ ढह गए। चीन के बांध आलोचक फैन ज़ियाओ ने चेतावनी दी है कि देश के खराब तरीके से निर्मित और खतरनाक जलाशय टाइम बम हैं जो किसी भीषण बाढ़ या अन्य अप्रत्याशित घटना की स्थिति में उजागर होने का इंतज़ार कर रहे हैं।

हाल ही में अपडेट की गई एक रिपोर्ट के अनुसार, 'इसका एक उदाहरण २००१ की आपदा है जब तिब्बत में एक कृत्रिम बांध के ढह जाने से २६ लोगों की मौत हो गई और अरुणाचल प्रदेश में सियांग नदी के किनारे १४० करोड़ रुपये (१.६ करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक) की संपत्ति को नुकसान पहुंचा।'

◆ निष्कर्ष

उपर्युक्त चेतावनियों से पता चलता है कि चीन की अनियंत्रित बांध निर्माण और खनन गतिविधियां सिर्फ़ तिब्बत की समस्या नहीं हैं। वे भारत, नेपाल, भूटान और मेकांग के किनारे बसे देशों के लिए एक टाइम बम हैं। इन तटीय देशों को तिब्बतियों के साथ मिलकर अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाना चाहिए ताकि चीन को तिब्बती नदियों पर बांध बनाने से रोका जा सके और ताज़े पानी का मुक्त मार्ग सुनिश्चित किया जा सके।

चीन की यह आधिपत्यवादी विस्तारवादी नीति सफल नहीं होनी चाहिए। इसके अलावा, सीसीपी शासन को चेतावनी दी जानी चाहिए और बहुत देर होने से पहले चीन को इस महा आपदा के लिए जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए।

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षो से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी निली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
कार्यवाहक समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः coordinator@indiatibet.net

ईटानगर में कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज
– इंडिया की बैठक और 'पर्यावरण और सुरक्षा' पर संगोष्ठी

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने भारत का ७६ वां
गणतंत्र दिवस मनाया

स्कॉटिश संसद में तिब्बती प्रतिनिधि की भूमिका को मान्यता देने वाला प्रस्ताव पेश

इटानगर में 'पर्यावरण और सुरक्षा' विषयक संगोष्ठी में तिब्बत-भारत की एकजुटता दिखी